

फ्यूचर लाईन टाइम्स

संक्षिप्त समाचार

24 छात्राओं को लगाया गया एचपीवी टीका

लखनऊ, एजेंसी। सर्वोच्चल कैम्पर की रोकथाम और किशोरियों में निवारक स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता के लिए रविवार को गौमतीनगर स्थित प्रेरणा स्टडी हॅल में एचपीवी टीकाकरण व जागरूकता अभियान आयोजित किया गया।
रोटरी क्लब ऑफ राजधानी और रोटरी क्लब ऑफ लखनऊ एलियोस के संयुक्त तत्वाधान में हुए कार्यक्रम में इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) की डॉ. शिषा नाथ ने समय पर एचपीवी टीकाकरण की उपयोगिता बताई। इस दौरान 24 छात्राओं को टीके लगाए गए। कार्यक्रम का आयोजन डॉ. अजय गुप्ता, डॉ. बीएन यादव, नसीम और डॉ. विनय सिंह के मार्गदर्शन में हुआ। समन्वय रोटेरियन अनिकेत आनी ने किया। इस मौके पर क्लब प्रताधिकारी व सदस्य मौजूद रहे।.....

तीज के रंग में रंगा रोटरी क्लब

वाराणसी। रोटरी क्लब वाराणसी मंगा ने रविवार को मलदहिया के एक लेवल में तीन महोत्सव मनाया। महोत्सव की थीम बरसो रे मेघा-मेघा मानसून रही। कार्यक्रम का शुभारंभ समानसेवी रीना गर्ग ने दीप प्रज्वलन के साथ किया। सभी सदस्यों का स्वागत ऊषा जैन ने टीका लगाकर किया। गणेश वंदना की प्रस्तुति के साथ मुख्य कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सग्ह की अंजु गोयल, जुली गुप्ता सुनीता अग्रवाल और ज्योति गुप्ता ने कजरी गीत वगैां सखी-सखी देख आए गोरा के सैया... पर प्रस्तुति दी। शालिनी वर्मा, अनीता जायसवाल और संपा सेन ने मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किया। मुख्य अतिथि रीना गर्ग ने कहा कि तीज ऐसा त्योहार है जो आपस में, परिवार में और सभी सदस्यों के बीच एक भारतीय संस्कृति की झलक प्रेश करता है। संचालन नीतू गुप्ता, शारदा अग्रवाल और सीता जायसवाल ने किया।.....

माया नगर में खड़जा-नाली नहीं, जलमराव से परेशानी

आगरा। माया नगर, जैतपुर के गुलशन, नाथूराम, दाताराम, विनय, अशोक कुमार, रिंकु, सुनीता देवी, रीना आदि ने एसडीएम बाह विनोद कुमार से इसकी शिकायत की। बताया कि बस्ती का रास्ता ऊबड़ खाबड़ एवं कच्चा है। घरो और बारिश का पानी गली में बहता है। नाली न होने की वजह से बहने वाले जलमराव में आए दिन राहगीर फिसल कर गिर जाते हैं। नाथूराम के घर से अशोक फौजी के घर तक 80 मीटर लंबा खड़जा बनना है। वाम पंचायत ने मिट्टी डलवाई है। खड़जा न बनने से बस्ती के लोग परेशान हैं। एसडीएम ने बीडीओ के माध्यम से समस्या के समाधान कराने का आश्वासन दिया है।.

देवछठ मेले में बच्चों ने दी सांस्कृतिक प्रस्तुतियां

अलीगढ़। छैर रोड स्थित सिद्धपीठ श्री खेडेश्वर धाम मंदिर परिसर में आयोजित देवछठ मेले के दो दिनें देव छविार को बच्चों के सांस्कृतिक कार्यक्रम और कृष्ण लीला रासलीला का आयोजन हुआ। 50 से अधिक बच्चों ने विभिन्न प्रस्तुतियां दी। पूर्व अध्यक्ष सत्यपाल सिंह और कालू शर्मा ने गां सदस्यों की प्रतिभा के समक्ष दीप जलाकर कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। समिति प्रताधिकारियों ने प्रतिगानी बच्चों को पुरस्कार और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। शाम को आदर्श श्री निरिष्टान कृष्ण प्रेम संस्थान, नथूरु के कलाकारों ने माखन घोर लीला का मंचन किया। इसके बाद रसिया दंगल में सतो शर्मा-उमेश शर्मा अतरीली और मुकेश शर्मा रिव्रो, हथरस के अश्वार्थी के बीबी मुकलाबल हुआ।.

प्रतिभा सम्मान में 2000 लोगों ने दिया सामाजिक एकता का संदेश

वाराणसी। ओबेसी बनिया प्रतिभा सम्मान समारोह-स्नेह मिलन 2026 रविवार को आनन्दपुर क्षेत्र के जायसवाल कटार में मनाया गया। इसमें करीब दो हजार लोग शामिल हुए। इसका मुख्य उद्देश्य समाज की प्रतिभाओं को सम्मानित करना और सामाजिक एकता को मजबूत करना था। कार्यक्रम का शुभारंभ गणेश वंदना और सांस्कृतिक प्रस्तुतियों से हुआ। इसके बाद सहस्त्रबाहू अर्जुन महासज के चित्र पर माल्यार्पण और दीप प्रज्वलन किया गया। दोपहर तीन बजे विभिन्न क्षेत्रों के प्रतिभावान लोगों को सम्मानित किया गया। इनमें डॉक्टर, इंजीनियर, प्रोफेसर, खिलाड़ी, गायक और सफल व्यावसायी शामिल थे। इंटर प्रमाल, सुशील जायसवाल, आलोक साह, स्वजिन जायसवाल, प्रमोद जायसवाल और आशीष जायसवाल को सम्मानित किया गया। संचालन डॉ प्रमोद जायसवाल ने किया। आयोजन समाकांत जायसवाल ने बताया कि समाज को विभिन्न उपनामों में बाँटकर कमजोर करने का प्रयास किया गया है। यह मंच बनिया समाज की शिक्षा, साहित्य, खेल, प्रशासन और राजनीतिक क्षेत्रों में एकजुट करने का काम कर रहा है।.

जीवन लंबा नहीं, अच्छे से जीवन महत्त्वपूर्ण : राजेश्वरी मोदी

वाराणसी। सिंगरा स्थित उदाय कन्वेंशन सेंटर में रविवार को कुबेर का सजना कार्यक्रम हुआ। इसमें मुंबई से आई एक वक्ता राजेश्वरी मोदी ने सुहासली के मंत्र दिए। कार्यक्रम में करीब 700 लोग शामिल हुए। नारायण रेवती सत्यम परिवार की ओर से आयोजित समारोह में राजेश्वरी मोदी ने कहा कि लंबा जीने के बजाय जीवन को अच्छे से जीना महत्वपूर्ण है। उन्होंने फूलों का उदाहरण देते हुए बताया कि ये अल्प समय में भी अपनी सुगंध छोड़ जाते हैं। राजेश्वरी मोदी ने मनुष्य जीवन को ईश्वर की सर्वोत्तम रचना बताया। उन्होंने वाणी के सदुरोपयोग पर जोर दिया। कल कि सुट, आत्म परेशना, निद्रा और दोषारोपण से बचना चाहिए। वाणी पर नियंत्रण ही असली कुबेर के खजाने तक ले जाता है। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन, शंखघनि और नारायण की माला के साथ हुआ। प्रांथु मालोटिया ने भजन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम सरोजक अनीता मालोटिया ने स्वागत किया। अर्पिता गोखल ने संचालन और दिलीप अग्रवाल ने धन्यवाद दिया। इस अवसर पर गोपाल, अहिली, मुंबई सहित कई शहरो से नारायण रेवती परिवार के सदस्य मौजूद रहे।.

अरिल के तटवर्ती गांवों के लोग होते रहे बीमार, वजह नहीं तलाश पाया स्वास्थ्य विभाग

बरेली। अरिल नदी का जल तंत्र प्रभावित होने से तटीय गांवों के लोग वर्षों से बीमार होते रहे, लेकिन स्वास्थ्य विभाग इसकी वजह नहीं तलाश पाया। महकमा स्वास्थ्य शिविर लगाकर दवाएं बांटते तक सिमटा रहा। अब प्रशासन और वर्ल्डवाइड फंड फॉर इंडिया (डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) के सर्वे में तटवर्ती गांवों के भू-जल में कुल घुलित ठोस (टीडीएस) की मात्रा 10 गुना तक अधिक मिलने पर इस राज से पर्दा उठा है। दरअसल, टीम ने वर्ष 2018 में अरिल नदी के किनारे बसे दस गांवों के भू-गर्भ जल का स्तर का मापा। यह सामान्य से काफी नीचे मिला। जिले के जिन तीन ब्लॉक से होते हुए अरिल नदी निकल रही है, भू-गर्भ जल विभाग की रिपोर्ट में भी ये तीनों ब्लॉक संवेदनशील श्रेणी में शामिल हैं। भू-गर्भ जल

का स्तर लगातार नीचे जाने से पानी का टीडीएस बढ़ना स्वाभाविक है। स्थानीय लोगों के अनुसार, यहां बड़ी संख्या में लोग बीमार पड़े तो स्वास्थ्य विभाग ने शिविर लगाकर इलाज तो किया, लेकिन बीमारी की वजह जानने की जहमत नहीं उठाई। अब प्रशासन के प्रयास के बाद अरिल को सांसें और स्थानीय लोगों को राहत मिलने के आसार नजर आ रहे हैं। जिला अस्पताल के फिजिशियन डॉ. वैभव शुक्ला ने बताया कि 90 फीसदी बीमारियां अंतर्गुलित खानपान और दूषित पानी के सेवन से होती हैं। अगर घरों में दूषित पानी आ रहा है तो उसे उबाल कर सेवन करना चाहिए। लगातार दूषित पानी के सेवन से पेट, आंत समेत अन्य संबंधित बीमारियां होने की आशंका रहती है।

उत्तर प्रदेश

12 करोड़ की लागत से सड़कों की कराई जाएगी मरम्मत

नवरात्र से पहले 48 किमी सड़कें होंगी गड्ढामुक्त

बरेली, एजेंसी। नवरात्र से पहले 12 करोड़ की लागत से शहर की 48.5 किमी लंबी सड़कों को गड्ढामुक्त किया जाएगा, ताकि श्रद्धालुओं को कोई परेशानी न हो। इसके लिए नगर निगम ने पैचवर्क के टेंडर फाइनल कर दिए हैं। काम को 10 अक्तूबर तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है।

नगर निगम की तरफ से नवरात्र में नवदुर्गा पूजा पंडालों तक पहुंच मार्ग व मुख्य मार्गों को दुरुस्त कराने का निर्णय लिया गया है। बारिश की वजह से शहर की सड़कें जगह-जगह गड्ढे में तब्दील हो गई हैं। ऐसे में नगर निगम की 66 सड़कों को चिह्नित किया गया है। इनको गड्ढामुक्त कराया जाएगा।

चौकी चौराहा-जंक्शन मार्ग, जंक्शन-चौपुला मार्ग, चौपुला-पटेल चौक मार्ग, चौकी चौराहा-पटेल चौक, पटेल चौक-कोतवाली-नावल्टी चौराहा, चौपुला-बिहारीपुर पुलिस चौकी मार्ग, गांधी उद्यान-श्यामगंज पुल मार्ग, बियावानी-चौकी चौराहा मार्ग, 300 बेड अस्पताल-खुर्रम गौतिया मार्ग, आईबीआरआई रोड, सौ फुटा रोड, सर्किट हाउस रोड, कचहरी रोड, एसएसपी कार्यालय रोड, चौकी चौराहा-

अब स्पीड गवर्नर के बिना नहीं बिकेगा नया वाहन, रजिस्ट्रेशन पर भी रोक

आगरा। सड़क सुरक्षा के लिए सुप्रीम कोर्ट ने एक सख्त आदेश जारी किया है। इसके तहत अब देश में कोई भी नया परिवहन वाहन गति नियंत्रक (स्पीड गवर्नर) के बिना न तो बेचा जाएगा और न ही उसका पंजीकरण होगा। केंद्र, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को वाहन की बिक्री, पंजीकरण और फिटनेस जांच के समय इसकी पुष्टि करनी होगी।

न्यायमूर्ति जेबी पारदीवाला और न्यायमूर्ति केवी विश्वनाथन की पीठ ने 15 सितंबर को रिट याचिका (सिविल संख्या 295 वर्ष 2012) में यह फैसला सुनाया। यह आदेश सड़क सुरक्षा कार्यकर्ता एवं वरिष्ठ अधिवक्ता केसी जैन की याचिकाओं और सुझावों पर आया है। कोर्ट ने केंद्र को नियम 118 के दायरे वाले परिवहन वाहनों में यह उपकरण अनिवार्य करने को कहा है। नियम तोड़ने वाले निर्माताओं या विक्रेताओं पर कार्रवाई होगी। सभी राज्यों के मुख्य सचिवों को आरटीओ अधिकारियों को निर्देश देने को कहा गया है कि पंजीकरण से पहले स्पीड गवर्नर की पुष्टि अनिवार्य हो। पुराने वाहनों में नियम पालन पर राज्यों को शपथपत्र देना होगा। अधिवक्ता केसी जैन के सुझाव पर पात्र



वाहनों, ट्रैकिंग उपकरणों और गति नियंत्रकों का जिला व राज्यवार विवरण हर महीने वाहन पोर्टल से सार्वजनिक करने को कहा गया है। जिला सड़क सुरक्षा समितियां हर महीने समीक्षा कर राष्ट्रीय सड़क सुरक्षा बोर्ड को रिपोर्ट भेजेंगी। प्रत्येक ट्रैकिंग उपकरण का पहचान नंबर वाहन पोर्टल पर दर्ज होकर राज्य के निगरानी केंद्र से जुड़ा होना चाहिए। कोर्ट ने उत्तर प्रदेश के गंभीर मोटर वाहन मामलों पर चिंता जताई, जो 2023 के कानून के कारण समाप्त मान लिए गए थे। अदालत ने कहा कि गैर-समझौता योग्य और अनिवार्य जेल वाले मामलों में मुकदमा न चलाने का कोई उचित कारण नहीं है। इसके अलावा, दिल्ली में मथुरा रोड पर पैदल यात्रियों की सुरक्षा के लिए केंद्र और दिल्ली सरकार को छह सप्ताह में विशेषज्ञ नियुक्त कर सुरक्षित पारपथ, सिग्नल और इलेक्ट्रॉनिक निगरानी के उपाय सुझाने के निर्देश दिए गए हैं।

ओवैसी बोले- नहीं बनने देंगे भाजपा सरकार, किसी भी पार्टी से गठबंधन करने के लिए तैयार

कानपुर, एजेंसी। उत्तर प्रदेश में तीसरी बार भाजपा की सरकार न बने, इसके लिए एआईएमआईएम (ऑल इंडिया मजलिस-ए-इतेहादुल मुस्लिमीन) किसी भी पार्टी से गठबंधन करने के लिए तैयार है। गैर भाजपाई पार्टियों से गठबंधन के लिए बात चल रही है। दो अक्तूबर तक गठबंधन के लिए इंतजार कर रहे हैं। जिसके साथ गठबंधन होगा, उसी के साथ प्रदेश में एआईएमआईएम चुनाव लड़ेगी। ये बातें रविवार को एआईएमआईएम के राष्ट्रीय अध्यक्ष असदुद्दीन ओवैसी ने किया। बाबूपुरवा इंदगाह मैदान में जनसभा को संबोधित करते हुए ओवैसी ने कहा कि प्रदेश में मुसलमानों का विकास नहीं हो रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और सपा प्रमुख अखिलेश यादव का नाम लिए बिना बाबा, भड़या कहरर दोनों को आड़े हाथों लिया। कहा कि सहारनपुर में मस्जिद और यहां बरां में कब्रिस्तान



तोड़ना अराजकता है। मुजफ्फरनगर दंगा का जिक्र करते हुए उन्होंने पूर्व में रही सपा सरकार पर सवाल उठाए। कहा कि उस समय विधानसभा में 47 मुस्लिम विधायक होने के बावजूद मुस्लिमों को इसाफ नहीं मिला। आरोप लगाया कि सपा में एमवाई नहीं केवल वाई है। अब भाजपा के राज में टी है। बताया कि मुसलमानों ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई लड़ी, कुर्बानियां दीं। आरएसएस पर भी आरोप लगाया।

उन्होंने कहा कि आजादी के बाद से अब तक सियासी दलों ने मुसलमानों को वोट बैंक की तरह इस्तेमाल किया है। मुस्लिम समाज को केवल चुनाव के समय याद किया जाता है। चुनाव के समय वोट से झौली भरने का काम किया जात है लेकिन शिक्षा, रोजगार, संपत्ति, राजनीतिक हिस्सेदारी के लिए ठोस काम नहीं हुआ।

छवनी विधायक पर भी कसा तंज : छवनी क्षेत्र के विधायक

मोहम्मद हसन रूमी को भी उन्होंने आड़े हाथों लिया। कहा कि उन्होंने न तो पुल बनवाया, अन्य वादे भी पूरे नहीं किए। रूमी कहते हैं कि वोट डिवाइड न हो जबकि विकास के नाम पर कुछ नहीं किया। बरां में कब्रिस्तान तोड़ने पर भी कुछ नहीं किया। एनआरसी का मुद्दा उठाते हुए सवाल किया कि इस मामले में बाबूपुरवा के तीन लोग मारे गए, उसमें विधायक ने क्या किया।

आई लव मोहम्मद के नारे मी लगावा

कानपुर को क्रांति की धरती बताते हुए ओवैसी ने कहा कि यहां के बुजुर्गों ने देश के लिए कुर्बानी दी है। आगामी विधानसभा चुनाव से पहले यहां दो - तीन बार आने का एलान किया। भाषण के अंत में उन्होंने आई लव मोहम्मद के नारे भी लगावाे। जनसभा का संचालन पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष शेख ताहिर सिद्दीकी ने किया। दिलदार गाजी, नासिर खान आदि मौजूद रहे।



लोहिया पार्क मार्ग, चौकी चौराहा-बरेली कॉलेज मार्ग, बानखाना रोड-कोहाड़पीर मार्ग, शांति बिहार-बदायूं रोड-सितौरा चौराहा मार्ग, गुप्ता चौराहा-आईबीआरआई रोड और झूलेलाल द्वार मार्ग, आदिनाथ चौक-पौलीभीत

बाइपास मार्ग, ताड़ीखाना रोड, पटेल चौक-सिकलापुर मंदिर मार्ग, हेड पोस्ट ऑफिस-बरेली होटल मार्ग, गुप्ता चौराहा-आईबीआरआई रोड और कार बाजार वाली रोड।

दौड़ से नहीं, गले में प्लास्टिक बोतल फंसने से हुई मौत, अभ्यर्थी की मौत मामले में नया मोड़



होमगार्ड भर्ती : दौड़ते-दौड़ते मंजिल से पहले थम गई कंप्यूटर साइंस इंजीनियर की सांसें : मुरादाबाद में होमगार्ड भर्ती परीक्षा के लिए आयोजित दौड़ में मंजिल महज 50 मीटर दूर थी और बेहोश होकर गिरे कंप्यूटर साइंस इंजीनियर शिवम यादव (27) जिंदगी हार गए। बरेली के शिवम ने 11 राउंड सफलतापूर्वक पूरे कर लिए थे लेकिन 12वें राउंड में लक्ष्य के नजदीक पहुंचते ही सांसें थम गईं। पोस्टमार्टम रिपोर्ट में हार्ट अटैक से मौत की पुष्टि हुई है। यह घटना सिविल लाइंस क्षेत्र के कांठ रोड स्थित नौवीं वाहिनी पीएसी के

मैदान की शुक्रवार सुबह लगभग सवा आठ बजे की है। एसएसपी सतपाल अंतिल ने बताया कि बरेली के सुभाष नगर थाना क्षेत्र के नई बस्ती वंशी नगला बेनीपुर चौधरी निवासी अधिवक्ता विनोद यादव बरेली बार एसोसिएशन के पूर्व कोषाध्यक्ष हैं।

उनके चार बेटों में दूसरे नंबर के बेटे कंप्यूटर साइंस से बीटेक शिवम यादव ने होमगार्ड भर्ती के लिए आवेदन किया था। शुक्रवार की सुबह पांचवीं पाली में नौवीं वाहिनी पीएसी के मैदान में दौड़ परीक्षा थी।

बृहस्पतिवार की रात करीब दस बजे शिवम अपने पिता विनोद यादव और मौसेरे भाई हिमांशु यादव के साथ बरेली से रोडवेज बस में सवार होकर मुरादाबाद आए थे। हिमांशु की अंतिम पाली में दौड़ होनी थी जबकि शिवम की पांचवीं पाली में दौड़ परीक्षा थी। निर्धारित 4800 मीटर दौड़ पूरी करने के लिए 28 मिनट का समय दिया गया था।

शिवम शुक्रवार सुबह-सुबह 8.16 बजे अपनी दौड़ का 12वां राउंड लगा रहे थे। इसी बीच समय पूरा होने में करीब 50 सेकंड शेष बचा था। शिवम अपनी मंजिल से मात्र 50 मीटर दूर थे। इसी दौरान वह बेहोश होकर गिर गए।

आठ किमीकी राह, 51से ज्यादा झांकियां; गांव-गांव पुष्पवर्षा से होगा स्वागत

आगरा। श्री मन:कामेश्वर और से आयोजित श्री मन:कामेश्वर रामलीला महोत्सव एवं श्रीराम बरात की तैयारियां तेज हो गई हैं। 11 से 21 अक्तूबर को रामलीला महोत्सव होगा। 15 और 16 अक्तूबर को गढ़ी ईश्वरा, दिनेर से शमसाबाद तक श्रीराम बरात निकाली जाएगी। तैयारियों पर रविवार को धमैना रोड स्थित आर्य पोली हाउस में बैठक हुई। इसमें बरात के मार्ग, स्वागत, सुरक्षा, झांकियों, रात्रि विश्राम और धार्मिक आयोजनों की व्यवस्थाओं पर चर्चा की गई।

करीब आठ किलोमीटर लंबे मार्ग पर 51 से अधिक झांकियां बरात का हिस्सा बनेंगी। इनमें

मध्य प्रदेश, केरल और झारखंड से आने वाली झांकियां विशेष आकर्षण रहेंगी। बैठक यहां भगवान श्रीराम, भोलेनाथ अध्यक्षता मठ के प्रशासक हरिहर पुरी, महंत योगेश पुरी महाराज

मस्तिष्क की कोशिकाओं को नुकसान पहुंचने से लोगों में यह बीमारी होती है

अब तक बीमारी का कोई सटीक इलाज नहीं मिला है। जीवनशैली में बदलाव कर कुछ हद तक इस बीमारी से बचा जा सकता है। बीमारी के शुरुआती लक्षणों पर बेहद ध्यान देने की जरूरत होती है। शुरुआत में सामान्य समझकर लोग ध्यान नहीं देते लेकिन जब बीमारी ज्यादा बढ़ जाती है तो लंबा इलाज कराना पड़ता है।

बढ़ती उम्र में यादाश्त बढ़ाने की गतिविधियां जरूरी

चिकित्सक ने बताया कि 60 पार के बाद मानसिक क्षमता मजबूत बनाए रखने के लिए नई चीजें सीखना, पढ़ना जारी रखना चाहिए। पहलियां सुलझाएं, शतरंज खेलें। शारीरिक गतिविधि बनाएं जैसे तेज चलना, तैरना, साइकिल चलाना। इससे मस्तिष्क में रक्त संचार बढ़ता है। हरी सब्जी, ताजे फल, साबुत अनाज का सेवन करें। हाई ब्लड प्रेशर, हाई कोलेस्ट्रॉल, मधुमेह नियंत्रित रखें। अच्छी नींद लें। सामाजिक मेलजोल बढ़ाएं। नशे से बचें।

2027 के मिशन की तैयारी में जुटी भाजपा, नितिन नवीन ने कार्यकर्ताओं को दिया बूथ मजबूत करने का मंत्र

फ्यूचर लाईन टाइम्स

गाजियाबाद । पश्चिमी उत्तर प्रदेश के दौरे पर पहुंचे भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष नितिन नवीन का सोमवार को गाजियाबाद में कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। राष्ट्रीय राजमार्ग-9 पर आयोजित स्वागत कार्यक्रम में बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता पहुंचे। इस दौरान कार्यकर्ताओं में उत्साह और जोश दिखाई दिया। स्वागत से अभिभूत नितिन नवीन ने कार्यकर्ताओं का आभार जताते हुए उन्हें वर्ष 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारियों में जुटने का आह्वान किया।

बूथ स्तर पर संगठन मजबूत करने पर जोर



नितिन नवीन ने कहा कि कमल का निशान भाजपा की पहचान है और प्रत्येक कार्यकर्ता को संगठन की मजबूती के लिए पूरी निष्ठा के साथ काम करना चाहिए। उन्होंने कहा

कि व्यक्ति केवल माध्यम है, जबकि पार्टी का विचार और संकल्प सर्वोपरि है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से अपने-अपने बूथों पर सक्रिय रहकर पार्टी के विचारों और केंद्र तथा प्रदेश



सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जनता तक पहुंचाने का आह्वान किया।

दुष्प्रचार का जवाब संगठन की मजबूती से देने की अपील

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने कहा कि संगठन की वास्तविक मजबूती बूथ स्तर से होती है। कार्यकर्ताओं को अपने बूथों पर लगातार सक्रिय रहना चाहिए और जनता के बीच पार्टी की

नीतियों एवं योजनाओं की जानकारी पहुंचानी चाहिए। उन्होंने विपक्ष की ओर से किए जा रहे दुष्प्रचार का जवाब भी बूथ स्तर पर संगठन को मजबूत करके देने की बात कही।

बड़ी संख्या में पदाधिकारी और कार्यकर्ता रहे मौजूद

कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष पंकज चौधरी, क्षेत्रीय अध्यक्ष नवाब सिंह नागर, सांसद अतुल गर्ग, सांसद एवं राष्ट्रीय मंत्री भोला सिंह, कैबिनेट मंत्री सुनील शर्मा, राज्य मंत्री नरेंद्र कटारिया, प्रदेश महामंत्री राजेश सिंह, सदर विधायक संजीव शर्मा, अजीत पाल त्यागी सहित बड़ी संख्या में भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ता मौजूद रहे।

गाजियाबाद में तीरथ सिंह रावत का भव्य स्वागत, व्यापार मंडल पदाधिकारियों ने किया अभिनंदन

फ्यूचर लाईन टाइम्स

गाजियाबाद। भाजपा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष एवं उत्तराखंड के पूर्व मुख्यमंत्री तीरथ सिंह रावत के गाजियाबाद आगमन पर राष्ट्रीय व्यापार मंडल के राष्ट्रीय महामंत्री विवेक त्यागी के क्ताउड-9 कंपाउंड में भव्य स्वागत एवं अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में राष्ट्रीय व्यापार मंडल के पदाधिकारियों, तिरंगा सैल्यूट टीम के सदस्यों एवं गणमान्य नागरिकों ने पुष्पगुच्छ और माल्यार्पण कर उनका स्वागत किया। तीरथ सिंह रावत ने सम्मान के लिए सभी का आभार जताते हुए कहा कि संगठन द्वारा दी गई नई जिम्मेदारी का निर्वहन पूरी निष्ठा और समर्पण के साथ करेंगे। उन्होंने कार्यकर्ताओं को संगठन की शक्ति बताते हुए समाज एवं राष्ट्रहित में सेवा कार्यों को आगे बढ़ाने का आह्वान किया।

विवेक त्यागी ने कहा कि तीरथ सिंह रावत का गाजियाबाद आगमन



गौरव का अवसर है। उनके संगठनात्मक अनुभव से कार्यकर्ताओं को प्रेरणा मिलेगी। कार्यक्रम में एस.पी. मिश्रा, विवेक त्यागी, राकेश शर्मा सदरपुर, चिन्मय भारद्वाज, बृज भूषण मित्तल, मुकेश शर्मा, प्रदीप चौधरी, रितेश शर्मा, अशोक भारतीय, बालकिशन गुप्ता, हिमांशु शर्मा, विशाल जैन, समीर शर्मा, संदीप त्यागी रसम, काजल

छिब्रर, संजय शर्मा, अनिल जुल्का और डॉ. शुचि मेहरा सहित अनेक पदाधिकारी मौजूद रहे। कार्यक्रम में एस.पी. मिश्रा, विवेक त्यागी, राकेश शर्मा सदरपुर, चिन्मय भारद्वाज, बृज भूषण मित्तल, मुकेश शर्मा, प्रदीप चौधरी, रितेश शर्मा, अशोक भारतीय, बालकिशन गुप्ता, हिमांशु शर्मा, विशाल जैन, समीर शर्मा, संदीप त्यागी रसम, काजल



फ्यूचर लाईन टाइम्स

गाजियाबाद। लाजपत नगर, साहिबाबाद निवासी 79 वर्षीय वरिष्ठ नागरिक जयंत बाबूराव ने शहर हित में 15 वर्ष पहले नगर निगम को दिए अपने सुझावों को धरातल पर साकार होते देख नगर आयुक्त विक्रमादित्य सिंह मलिक से मुलाकात कर निगम का आभार जताया। उन्होंने विशेष रूप से नंदी पार्क गौशाला की व्यवस्था, निराश्रित श्वानों में माइक्रोचिप लगाने एवं वैकसीनेशन, डोर-टू-डोर

कूड़ा संग्रह और कचरा पृथक्करण जैसे कार्यों की सरहना की। जयंत बाबूराव ने बताया कि उन्होंने करीब 15 वर्ष पहले श्वानों में माइक्रोचिप लगाने, गीले कचरे से खाद बनाने तथा पर्यावरण संरक्षण से जुड़े अन्य विषयों पर निगम को सुझाव दिए थे। इन कार्यों को होते देखकर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की। नगर आयुक्त ने उनके उत्साह और शहर हित में निरंतर सहयोग की सरहना करते हुए उन्हें प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। मौके पर

नगर स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मिथिलेश और मुख्य अभियंता निर्माण नरेंद्र कुमार चौधरी मौजूद रहे। नगर आयुक्त ने शहरवासियों से कचरा पृथक्करण, प्लास्टिक मुक्त गाजियाबाद तथा रिड्यूस, रीयूज और रीसाइकिल को बढ़ावा देने में सहयोग की अपील की। उन्होंने कहा कि शहर हित में योगदान देने वाले सामाजिक संगठनों और नागरिकों को निगम द्वारा सम्मानित किया जा रहा है।

पीएम सूर्यघर योजना में लंबित ऋण आवेदनों के शीघ्र निस्तारण के निर्देश



फ्यूचर लाईन टाइम्स-ग्रेटर नोएडा। पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के प्रभावी क्रियान्वयन और प्रगति की समीक्षा को लेकर सोमवार को कलेक्टर सभागार में मुख्य विकास अधिकारी भाल चंद्र त्रिपाठी की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। बैठक में योजना की प्रगति की समीक्षा करते हुए संबंधित अधिकारियों और बैंक प्रतिनिधियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए। मुख्य विकास अधिकारी ने अग्रणी बैंक प्रबंधकों को निर्देशित किया कि योजना के तहत प्राप्त ऋण आवेदनों को अनावश्यक रूप से निरस्त न किया जाए। उन्होंने बैंकों में लंबित आवेदनों का शीघ्र निस्तारण कर पात्र लाभार्थियों को ऋण वितरण की कार्यवाई सुनिश्चित करने को कहा। उन्होंने विद्युत विभाग के संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि लाभार्थियों के यहां सौर संयंत्र स्थापित होने के बाद नेट मीटर लगाने की प्रक्रिया निर्यंत्रित समयसीमा में पूरी कराई जाए, ताकि पात्र लाभार्थियों को योजना का लाभ समय से मिल सके। मुख्य विकास अधिकारी ने पंजीकृत वेंडरों को भी सौर संयंत्र स्थापना के कार्य में तेजी लाने और संयंत्र स्थापित होने के बाद संबंधित विद्युत पीएम सूर्यघर योजना के पोर्टल पर अनिवार्य रूप से दर्ज करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी संबंधित विभागों, बैंक प्रतिनिधियों और पंजीकृत वेंडरों से आपसी समन्वय के साथ कार्य करने तथा योजना के निर्धारित लक्ष्यों को समयबद्ध तरीके से पूरा करने पर जोर दिया। बैठक में योजना की प्रगति को गति देने और लाभार्थियों को समय पर लाभ उपलब्ध कराने से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर चर्चा की गई। बैठक में परियोजना अधिकारी, उत्तर प्रदेश नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा विकास अधिकरण, योजना के नोडल अधिकारी, एनपीसीएल, उत्तर प्रदेश पावर कॉर्पोरेशन लिमिटेड, अग्रणी बैंक प्रबंधक, विभिन्न बैंकों के प्रतिनिधि और पंजीकृत वेंडर मौजूद रहे।

ट्रेड शो में विद्यार्थियों की अधिकाधिक सहभागिता सुनिश्चित करने के निर्देश

फ्यूचर लाईन टाइम्स

ग्रेटर नोएडा। 25 से 29 सितंबर 2026 तक इंडिया एक्सपोजे सेंटर एंड मार्ट, ग्रेटर नोएडा में आयोजित होने वाले उत्तर प्रदेश इंटरनेशनल ट्रेड शो-2026 की तैयारियों को लेकर सोमवार को जिलाधिकारी की अध्यक्षता में एनआईसी सभागार में बैठक हुई। इसमें विभिन्न स्कूल-कॉलेजों के प्रतिनिधियों और संबंधित विभागीय अधिकारियों ने भाग लिया। जिलाधिकारी ने शिक्षण संस्थानों से अधिक से अधिक विद्यार्थियों को ट्रेड शो में प्रतिभाग करने के लिए प्रेरित करने के निर्देश दिए। उन्होंने बताया कि विद्यार्थियों के लिए प्रश्नोत्तरी और ह्यूबटेल ऑफ द बैड्सहू प्रतिযোগिता आयोजित की जाएगी। इसके

अलावा विद्यार्थियों को विभिन्न कार्य दिए जाएंगे और उन्हें पूरा करने वाले विद्यार्थियों को ट्रेड एक्सपोजे पासपोर्ट प्रदान किए जाएंगे। ट्रेड शो में विद्यार्थियों के लिए करियर परामर्श के विशेष सत्र और विभिन्न करियर विकल्पों से संबंधित स्टॉल भी लगाए जाएंगे। जिलाधिकारी ने कहा कि आयोजन विद्यार्थियों को उद्योग, व्यापार, नई तकनीक, रोजगार और करियर के अवसरों को समझने तथा अपने ज्ञान और कौशल का विस्तार करने का अवसर देगा। ट्रेड शो में उत्तर प्रदेश के शिल्प, संस्कृति और खान-पान को व्यापक मंच मिलेगा। एक जनपद, एक उत्पाद योजना के तहत विभिन्न जनपदों के विशिष्ट उत्पाद, स्थानीय हस्तशिल्प और



उद्यमियों के उत्पाद प्रदर्शित किए जाएंगे। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को स्कूल-कॉलेजों से समन्वय कर विद्यार्थियों के आवागमन और उनकी सहभागिता की आवश्यक व्यवस्थाएं समय से सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसके लिए नोडल अधिकारी नामित कर नियमित समन्वय रखने को कहा गया। साथ ही जनप्रतिनिधियों, विशिष्ट अतिथियों, आवासीय कल्याण समितियों, विभिन्न संगठनों, उद्यमियों और अन्य हितधारकों को समय से आमंत्रित करने के निर्देश दिए। जिलाधिकारी ने जनपदवासियों, विद्यार्थियों, उद्यमियों और विभिन्न संगठनों से अधिकाधिक संख्या में ट्रेड शो में शामिल होने का आह्वान किया।

बिसरख में श्रीमद्भागवत कथामृत का भव्य आयोजन, अशोक भाटी ने की आरती



फ्यूचर लाईन टाइम्स-ग्रेटर नोएडा। बिसरख में दिव्य ज्योति जाग्रति संस्थान द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत कथामृत के दूसरे दिन धार्मिक एवं भक्तिमय वातावरण देखने को मिला। कार्यक्रम में भारतीय किसान यूनियन, गौतमबुद्ध नगर के जिलाध्यक्ष अशोक भाटी मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। आयोजन समिति के सदस्यों श्यामलाल भाटी, रंगीलाल आर्य, वीरेंद्र भाटी, देवेंद्र भाटी एवं जितेंद्र भाटी ने पुष्पमाला पहनाकर और पटका भेंट कर उनका स्वागत किया। कथा व्यास मेरुदेवा भारती ने श्रीमद्भागवत कथा का भावपूर्ण वर्णन करते हुए श्रद्धालुओं को भक्ति और आध्यात्मिकता से जोड़ा। वहीं साध्वी नीमा भारती ने धर्म, भक्ति एवं सनातन संस्कारों के महत्व पर प्रकाश डाला। कथा के समापन पर अशोक भाटी ने आरती की। उन्होंने कहा कि श्रीमद्भागवत कथा में बच्चों और बुजुर्गों को अवश्य शामिल करना चाहिए। ऐसे धार्मिक आयोजनों से वातावरण भक्तिमय होने के साथ बच्चों में धर्म और संस्कारों के प्रति आस्था विकसित होती है। कथा का शुभारंभ 19 सितंबर को कलश यात्रा के साथ हुआ था, जिसका समापन 26 सितंबर को विशाल भंडारे के साथ होगा। इस अवसर पर अनूप नागर, संजय भाटी, धीरेंद्र भाटी 'टीरू', महेश गुजर, चमन भाटी सहित बड़ी संख्या में श्रद्धालु मौजूद रहे।

संत नारायण गुरु की पुण्यतिथि पर मनाया गया “पाखंड निवारण” दिवस, समानता और मानवता का दिया संदेश

फ्यूचर लाईन टाइम्स-साहिबाबाद। ज्ञानपीठ केन्द्र-1, स्वरूप पार्क, जी.टी. रोड, साहिबाबाद के प्रांगण में महान क्रांतिकारी, समाज सुधारक एवं मानवतावादी संत नारायण गुरु की पुण्यतिथि “पाखंड निवारण” दिवस के रूप में मनाई गई। कार्यक्रम में लोक शिक्षण अभियान ट्रस्ट के संस्थापक-अध्यक्ष एवं शिक्षाविद राम दुलार यादव मुख्य वक्ता रहे। अध्यक्षता डा. देवकर्ण चौहान ने, आयोजन इंजी. धीरेन्द्र यादव तथा संचालन श्रमिक नेता अनिल मिश्र ने किया। राम दुलार यादव ने कहा कि संत नारायण गुरु जातिवाद, कर्मकांड, रूढ़िवाद और सामाजिक कुरीतियों के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने शिक्षा, समानता, बंधुत्व और मानवता को समाज की उन्नति का आधार बताया। उनका संदेश “एक जाति, एक धर्म और ईश्वर एक” मानवतावादी विचारधारा का प्रतीक है। उन्होंने कहा कि संत नारायण गुरु के विचारों को अपनाकर ही अन्याय, शोषण और सामाजिक भेदभाव से मुक्त समाज का निर्माण किया जा सकता है। राजेन्द्र सिंह ने देश-प्रेम के गीत प्रस्तुत कर सभी को भाव-विभोर कर दिया। ताहिर अली ने ज्ञानपीठ संदेश पढ़ा। कैलाश चन्द्र, राम प्यारे यादव और जगन्नाथ प्रसाद ने भी विचार रखे। इस अवसर पर देवमन यादव, एस.एन. जायसवाल, राजाराम मोर्य, अरुण मोर्य, रंजीत यादव, विजय मिश्र, वीर सिंह सैन, सम्राट यादव, मुनीव यादव, ब्रह्म प्रकाश, अवधेश यादव, सुभाष यादव, विक्रम सिंह, सुरेशन यादव, अमृत लाल चौरसिया, दिलीप यादव, उमेश यादव और हरिकृष्ण यादव सहित अनेक लोगों ने संत नारायण गुरु के चित्र पर पुष्प अर्पित किए।



मिशन सामर्थ्य के तहत दिव्यांगजनों को मिला स्वरोजगार का आधार



फ्यूचर लाईन टाइम्स-गाजियाबाद। दिव्यांगजनों को आत्मनिर्भर बनाकर सम्मानजनक आजीविका से जोड़ने के उद्देश्य से जिला प्रशासन की ओर से संचालित मिशन सामर्थ्य के अंतर्गत सोमवार को दो दिव्यांगजनों को स्वरोजगार के लिए कियोस्क उपलब्ध कराए गए। सेवा संकल्प अभियान के तहत संयुक्त चिकित्सालय लोनी के मुख्य द्वार के निकट 90 प्रतिशत दिव्यांग वीरेंद्र और उनकी पत्नी को कियोस्क दिया गया। इसका उद्घाटन उप जिलाधिकारी लोनी दीपक सिंघनवाल ने किया। वहीं मोहन नगर में मेट्रो खंभा संख्या-310 के पास दिव्यांग संजय को उपलब्ध कराए गए कियोस्क का उद्घाटन जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी अंशुल चौहान ने किया। वीरेंद्र लोनी क्षेत्र के निवासी हैं। उनकी पत्नी नीरज और दो छोटे बच्चे हैं। परिवार की आजीविका को मजबूत करने के उद्देश्य से दंपति को स्वरोजगार के लिए कियोस्क उपलब्ध कराया गया है। वहीं संजय इस कियोस्क के माध्यम से अपना व्यवसाय शुरू कर नियमित आय अर्जित कर सकेंगे। जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार मांडड़ के निर्देश पर दिव्यांगजन सशक्तीकरण विभाग के दोनों स्थानों पर कियोस्क की स्थापना का उद्देश्य दिव्यांगजन सन्वय किया। कियोस्क के निर्माण में भारत विकास परिषद ने आर्थिक सहयोग दिया, जबकि नीव शक्ति संस्थान की रीचा वल्लभ के नेतृत्व में संस्था ने जिला प्रशासन और विभाग के साथ समन्वय कर निर्माण एवं स्थापना में सहयोग किया। अधिकारियों के अनुसार मिशन सामर्थ्य का उद्देश्य दिव्यांगजनों को केवल सहायता उपलब्ध कराने तक सीमित न रखकर उन्हें स्वरोजगार और सम्मानजनक आजीविका से जोड़ना है। सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक उत्तरदायित्व निधि के सहयोग से पात्र दिव्यांगजनों को कियोस्क उपलब्ध कराने की प्रक्रिया आगे भी जारी रहेगी। कार्यक्रम में नीव शक्ति संस्थान तथा भारत विकास परिषद के पदाधिकारी और अन्य सदस्य मौजूद रहे।

इंजेक्शन लगने के बाद महिला की मौत, चिकित्सक पर लापरवाही का आरोप

फ्यूचर लाईन टाइम्स-दादरी । जारचा क्षेत्र के खटाना-धीरखेड़ा गांव निवासी 50 वर्षीय महिला की इंजेक्शन लगने के बाद मौत हो गई। परिजनों ने चिकित्सक पर उपचार में लापरवाही का आरोप लगाते हुए पुलिस को शिकायत दी है। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर आवश्यक कार्यवाई शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही महिला की मौत के वास्तविक कारण की पुष्टि हो सकेगी। जानकारी के अनुसार खटाना-धीरखेड़ा गांव निवासी संदीप कुमार की मां शकुंतला देवी को 19 सितंबर को बुखार आया था। परिजन उनका उपचार पास के घनूवास गांव स्थित एक चिकित्सक से करा रहे थे। 20 सितंबर को चिकित्सक ने महिला को इंजेक्शन लगाने के लिए बुलाया था। परिजनों का आरोप है कि इंजेक्शन लगने के करीब दो मिनट बाद ही महिला की हालत अचानक बिगड़ गई।

असुविधाओं की रेल

वैसे तो दावे किए जाते रहे हैं कि भारतीय रेलवे को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाया जा रहा है, लेकिन हकीकत निराश करने वाली है। विडंबना यह है कि तमाम मुश्किलों में सफर करने वाला यात्री शिकायत दर्ज कराने के बजाय अपने गंतव्य स्थान पर पहले पहुंचना चाहता है। जिसके चलते सभी खामियों के साथ भारतीय रेल ढर्रे पर ही चल रही है। पिछले महीने संसद में पेश कैग की रिपोर्ट में सैकड़ों रेलवे स्टेशनों में पेयजल व अन्य मूलभूत सुविधाओं की कमी का उल्लेख किया गया था। यहां तक कि पेयजल में स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाने वाले जीवाणु पाये जाने की बात कही गई थी। रिपोर्ट में कहा गया था कि ८9 फीसदी स्टेशनों में बैठने की पर्याप्त जगह, पंखे, मार्गदर्शन करने वाले चिन्हों तथा शौचालय आदि बुनियादी सुविधाओं की कमी थी। कैग की रिपोर्ट की पुष्टि करती हुई लोक लेखा समिति ने भी अपनी पड़ताल में कई स्टेशनों में पेयजल, पंखे, बैठने के सुविधाजनक स्थान आदि पर्याप्त मूलभूत सुविधाओं को बांधित करने का प्रयास करते देखे जाते हैं। किसी ट्रेन के जबरनल डिब्बे में भेड़-बकरियों की तरह भरे यात्री कैसे सफर पूरा करते होंगे, अनुमान लगाना कठिन नहीं है। ट्रेन के भीतर शौचालयों की बुरी स्थिति देखकर यात्री मन मारकर उनका प्रयोग करते हैं। निश्चय ही रेलवे को निगरानी व्यवस्था ख़ासी लचर है। ऐसा लगता है कि किसी की जवाबदेही ही तय नहीं हुई। वहीं बड़ी संख्या में यात्री भी अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन नहीं करते। यहां-वहां बिखरा कूड़ा इसकी गवाही देता है। हमारे समाज में उस स्वच्छता चेतना का विकास नहीं हो पाया है, जो आजादी के आठवें दशक में हो जानी चाहिए थी। आखिर हम कब एक जिम्मेदार नागरिक की तरह रेलवे स्टेशनों व रेल के डिब्बों के भीतर साफ-सफाई रखना अपना कर्तव्य मानेंगे। लेकिन इसके बावजूद रेलवे को एक ऐसा जवाबदेह तंत्र विकसित करना होगा जो यात्रियों को बुनियादी सुविधा उपलब्ध करा सके। दरअसल, रेल मंत्रालय हासिल करने और अपने चुनावी क्षेत्र के लोगों को रेलवे में भर्ती करने को लेकर दशकों तक जो राजनीति चलती रही है, उसने भी किसी हद तक रेलवे व्यवस्था की गुणवत्ता को प्रभावित किया है। बहरहाल, अब यह तसवीर बदलनी चाहिए।

चिंतन-मनन

विचार-निर्विचार, चिंतन-अचिंतन

पूरा विश्व, विचारों पर चलता है, सारे आविष्कार, युद्ध, आतंकवाद, साहित्य सृजन, भाषण, प्रवचन, तू-तू, मैं-मैं सब विचारों की देन है। विचार ही सब कार्यों को अंजाम देता है। भक्ति, प्रार्थना, व्यवहार, सेवा सब विचारों की देन है। हम सोचते हैं तो करते हैं होता है। अब प्रश्न यह है कि विचार कैसे हो, दो श्रेणियों में बांटा गया है उन्हें, सकारात्मक, नकारात्मक, सकारात्मकता निर्माण करती है, नकारात्मकता विध्वंस, मनुष्य ने सभ्यता को ऊंचाई तक पहुंचाया है एक तरफ तो दूसरी तरफ नृशंसता के गतं में भी। जैसे विचार वैसा वातावरण और वृत्त। विचार करना सुविचार करना कोई किसी को जबरदस्ती नहीं सीखा सकता क्योंकि संस्कार, लालन-पालन, शिक्षा, मनन-चिंतन, संगति, वातावरण से विचारों में परिवर्तन होता है। पता नहीं यह नुनिया कब से बनी है, मनुष्य ने सोचना कब से शुरू किया, उसमें कैसे-कैसे परिवर्तन होते गया यह एक बड़ा गूढ़ विषय है। इस पर शास्त्र रचे जा सकते हैं। विचारों ने ही तो इतना ज्ञान इस विश्व को दिया है विज्ञान, साहित्य, शिक्षा, राजनीति, धर्म, कानून, जैसे-जैसे आवश्यकताएं होती गईं या बढ़ती गईं सब आविष्कार या रचना होती गईं। आतंकवाद, विस्तारवाद, युद्ध भी विचारों का खेल है। नेतृत्व के गलत विचारों का खामियाजा पूरे देश को देना होता है, कौम हो देना होता है। धार्मिक उन्माद भी कुछ गलत विचारों की देन है। बुध्दिहीन या कम बुध्दि वाले लोगों को बुध्दिमान चालाक लोग भेड़ों की तरह हांक कर अपने ढंग से उपयोग या द्रुपयोग करते हैं। इन्सान का अपना वजूद जब कमजोर होता है तो वह हिमोपाटइज हो जाता है दूसरों से और पीछे-पीछे चलने लगता है, उसे पता नहीं होता कि वह कुएं में जाएगा या खाईं में। हर कर्म के पीछे विचार होता है। सल्तर्म और बुरे कर्म। बिना विचारे कोई कुछ नहीं करता, यह अलग बात है कि कितनी गहराई और गंभीरता से विचार किया जाता है। आदमी हमेशा विचारों के हिंडोले में हिचकोले खाता रहता है, कभी आनंददायक कभी दुख देने वाले विचारों से स्वास्थ, विचार से रोग, वीरोचित कार्य कायराना कार्य। इसलिए विचारों को सुधार लीजिए सब कुछ ठीक हो जाएगा।

इस बार भी मोदी नहीं जाएंगे संयुक्त राष्ट्र महासभा, जयशंकर ही संभालेंगे मोर्चा, क्या ट्रंप से आमना-सामना नहीं चाहते पीएम?



नीरज कुमार दुबे

जयशंकर की यात्रा का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि भारत-अमेरिका संबंध इस समय कई कठिन सवालों से गुजर रहे हैं। रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर अमेरिका द्वारा भारी शुल्क लगाने की व्यवस्था ने नई दिल्ली की ऊर्जा सुरक्षा और वाशिंगटन के साथ व्यापारिक संबंधों के बीच तनाव पैदा किया है।

न्यू यॉर्क में संयुक्त राष्ट्र महासभा के 21वें सत्र की शुरुआत के साथ ही भारत की कूटनीतिक सक्रियता तेज हो गई है। इस बार भी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की जगह विदेश मंत्री डॉ. एस. जयशंकर भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। जयशंकर 26 सितंबर को महासभा को संबोधित करेंगे और इस दौरान कई देशों के नेताओं तथा विदेश मंत्रियों के साथ महत्वपूर्ण द्विपक्षीय और बहुपक्षीय बैठकें भी करेंगे। ऐसे समय में जब दुनिया युद्ध, ऊर्जा संकट, व्यापारिक टकराव और बदलते शक्ति संतुलन से जूझ रही है तब इस सत्र से काफी उम्मीदें की जा रही हैं। हम आपको बता दें कि इस सत्र में संयुक्त राष्ट्र के 193 सदस्य देशों के राष्ट्राध्यक्ष, शासनाध्यक्ष और वरिष्ठ प्रतिनिधि जुट रहे हैं। इस बार का केंद्रीय विषय है, विश्वास बहाल करना, बदलाव को संभालना और ऐसा संयुक्त राष्ट्र बनाना जो सभी के लिए परिणाम दें। महासचिव अंतोनिओ गुतेरेस ने वैश्विक नेताओं से शांति, गरिमा, न्याय और मानवता के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग मजबूत करने की अपील की है। यह उनके कार्यकाल का अंतिम महासभा सत्र भी है। ऐसे माहौल में भारत के सामने अपनी विदेश नीति की प्राथमिकताओं को बेहद स्पष्ट और मजबूती से रखने का अवसर है।

देखा जाये तो जयशंकर की यात्रा का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि भारत-अमेरिका संबंध इस समय कई कठिन सवालों से गुजर रहे हैं। रूस से तेल खरीदने वाले देशों पर अमेरिका द्वारा भारी शुल्क लगाने की व्यवस्था ने नई दिल्ली की ऊर्जा सुरक्षा और वाशिंगटन के साथ व्यापारिक संबंधों के बीच तनाव पैदा किया है। हम आपको बता दें कि अमेरिकी कानून राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को रूस से ऊर्जा खरीद जारी रखने वाले देशों पर सौ प्रतिशत तक शुल्क लगाने की शक्ति देता है। लेकिन भारत ने स्पष्ट किया है कि उसकी सर्वोच्च प्राथमिकता अपने लगभग एक अरब चालीस करोड़ नागरिकों की ऊर्जा सुरक्षा है और वह



अलग-अलग स्रोतों से ऊर्जा की आपूर्ति जारी रखेगा। यहीं से जयशंकर की न्यूयॉर्क यात्रा का असली सामरिक महत्व सामने आता है। भारत को एक साथ रूस के साथ अपने ऊर्जा और सामरिक संबंधों, अमेरिका के साथ व्यापार और सुरक्षा साझेदारी तथा ग्लोबल साउथ की चिंताओं को साधना है। संयुक्त राष्ट्र महासभा इस संतुलन को साधने के लिए सबसे बड़ा कूटनीतिक मंच उपलब्ध कराती है। जयशंकर की दर्जनों मुलाकातों में ऊर्जा, सुरक्षा, व्यापार, विकास और ग्लोबल साउथ के मुद्दे स्वाभाविक रूप से प्रमुख रहेंगे। इसके अलावा, भारत के लिए इस महासभा का एक अहम उद्देश्य 2028 से शुरू होने वाले दो वर्षीय कार्यकाल के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता हासिल करने

के समर्थन में विभिन्न देशों को साथ लाना भी है। इसके लिए जयशंकर अलग-अलग देशों के प्रतिनिधियों के सामने भारत का छह सूत्रीय घोषणापत्र रखेंगे और सुरक्षा परिषद में भारत की प्राथमिकताओं को स्पष्ट करेंगे। साथ ही, ग्लोबल साउथ के देशों के विकास में भारत की भूमिका, आर्थिक एवं मानवीय सहायता तथा संयुक्त राष्ट्र और अन्य बहुपक्षीय संस्थाओं के माध्यम से चलाए जा रहे कार्यक्रमों पर भी चर्चा होगी। पिछले वर्ष महासभा के दौरान जयशंकर ने 47 द्विपक्षीय और 10 बहुपक्षीय बैठकें की थीं। इससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस बार भी भारत की कूटनीतिक गतिविधियां कितनी व्यापक रहने वाली हैं। उधर, कूटनीतिक हलकों में संयुक्त राष्ट्र महासभा के वार्षिक सत्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गैरमौजूदगी को लेकर

दिया जाएगा। यह पहल इसलिए उपयोगी हो सकती है क्योंकि वैक्सीन से जुड़े निर्णय में डॉक्टरों की भूमिका महत्वपूर्ण होगी। योग्य लोगों को वैक्सीन की जरूरत, संभावित लाभ और सीमाओं के बारे में सही जानकारी चिकित्सकीय परामर्श के माध्यम से ही मिलनी चाहिए। भारत में पहली डेंगू वैक्सीन के आने की संभावित खबर को इसलिए एक शुरुआत के रूप में देखा जाना चाहिए, अंतिम समाधान के रूप में नहीं। डेंगू की चुनौती केवल वैक्सीन से खत्म नहीं होगी। मच्छरों के प्रजनन स्थलों को समाप्त करना, जलभराव रोकना, साफ-सफाई बनाए रखना, समय पर बीमारी की पहचान करना और अस्पतालों में उचित उपचार की व्यवस्था करना भी उतना ही आवश्यक रहेगा। सबसे बड़ी उम्मीद यह है कि वैक्सीन डेंगू से निपटने की मौजूदा रणनीति को मजबूत कर सकती है। लेकिन इसके साथ यह सावधानी भी जरूरी है कि वैज्ञानिक प्रमाण, नियामकीय मानक और सार्वजनिक स्वास्थ्य की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए निर्णय लेने में देर न लगे। 2027 की पहली छमाही में इसके संभावित लॉन्च से पहले अभी कई औपचारिक प्रक्रियाएं पूरी होनी हैं। इसलिए फिलहाल इसे डेंगू के खिलाफ लड़ाई में एक संभावित नए हथियार के रूप में देखना अधिक उचित होगा। आखिरकार, किसी वैक्सीन की सफलता केवल इस बात से तय नहीं होती कि वह बाजार में उपलब्ध हो गई है। असली कसौटी यह होगी कि वह कितने लोगों तक पहुंचती है, कितनी सुरक्षित और प्रभावी साबित होती है, उसकी कीमत कितनी वहनीय होती है और क्या वह देश की व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य नीति का हिस्सा बन पाती है।

भारत में डेंगू वैक्सीन की दस्तक: बीमारी के खिलाफ नई उम्मीद

है। हालांकि, इसके लिए आवश्यक स्थानीय नियामकीय और व्यावसायिक प्रक्रियाओं को पूरा करना अभी बाकी है। डेंगू के खिलाफ वैक्सीन का भारत में प्रवेश इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि अब तक इस बीमारी से बचाव का मुख्य आधार मच्छरों की रोकथाम, साफ-सफाई और संक्रमित व्यक्ति की समय पर चिकित्सकीय देखभाल ही रहा है। डेंगू के लिए कोई ऐसी व्यापक रूप से उपलब्ध दवा नहीं है जो संक्रमण को सीधे खत्म कर सके। ऐसे में रोकथाम के लिए वैक्सीन की उपलब्धता सार्वजनिक स्वास्थ्य व्यवस्था में एक नया विकल्प जोड़ सकती है। हालांकि, किसी भी नई वैक्सीन को लेकर उत्साह के साथ-साथ कुछ बुनियादी सवालों पर गंभीरता से विचार करना भी जरूरी है। सबसे पहला सवाल इसकी कीमत का है। फिलहाल क्यूडेंगा की भारत में कीमत को लेकर कोई आधिकारिक जानकारी सामने नहीं आई है। टेकेडा के इंटरकाॉन्टेंटल मार्केट्स के प्रमुख महेंद्र नायक के अनुसार, भारत में मार्केटिंग ऑथराइजेशन की मंजूरी मिलने के बाद अभी स्थानीय प्रक्रियाओं को पूरा करना प्राथमिकता है। इन प्रक्रियाओं के पूरा होने से पहले वैक्सीन की कीमत का अनुमान लगाना जल्दबाजी होगी। कीमत का सवाल इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि डेंगू केवल महागरीबों या संपन्न वर्ग की समस्या नहीं है। इसका प्रभाव छोटे शहरों, कस्बों और ग्रामीण क्षेत्रों तक दिखाई देता है। यदि वैक्सीन निजी बाजार में आती है और इसकी कीमत आम परिवारों की पहुंच से बाहर रहती है, तो इसका लाभ सीमित आबादी तक ही सिमट सकता है। इसलिए वैक्सीन की उपलब्धता जितनी महत्वपूर्ण है, उतनी ही महत्वपूर्ण उसकी सामर्थ्य भी है। यहां सरकार की भूमिका भी महत्वपूर्ण हो जाती है। कंपनियों ने संकेत दिया है कि क्यूडेंगा को भारत के

सार्वजनिक टीकाकरण कार्यक्रम में शामिल करना एक दीर्घकालिक लक्ष्य है। निजी बाजार में वैक्सीन की उपलब्धता शुरूआती चरण हो सकती है, लेकिन व्यापक सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रभाव तभी संभव होगा जब जरूरत और वैज्ञानिक साक्ष्यों के आधार पर इसे सरकारी टीकाकरण व्यवस्था में शामिल करने पर विचार किया जाए। किसी वैक्सीन को सार्वजनिक कार्यक्रम का हिस्सा बनाने का निर्णय केवल उसकी उपलब्धता के आधार पर नहीं होता। इसके लिए बीमारी का बोझ, वैक्सीन की प्रभावशीलता, सुरक्षा, अलग-अलग आयु समूहों में उसका प्रदर्शन, लागत-प्रभावशीलता और स्वास्थ्य व्यवस्था पर संभावित प्रभाव जैसे अनेक पहलुओं का मूल्यांकन आवश्यक होता है। भारत जैसे विशाल और विविध आबादी वाले देश में यह प्रक्रिया और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। क्यूडेंगा की भारत में उपलब्धता का एक दूसरा महत्वपूर्ण पहलु जागरूकता से जुड़ा है। डेंगू को लेकर समाज में अभी भी कई भ्रमों मौजूद हैं। कई बार लोग बुखार को सामान्य वायरल संक्रमण समझकर इलाज में देरी करते हैं। वहीं कुछ लोग डेंगू की रोकथाम को केवल मच्छर भगाने तक सीमित मानते हैं। वास्तव में डेंगू नियंत्रण के लिए व्यक्तिगत सावधानी, मच्छर नियंत्रण, स्वच्छता, समय पर जांच और चिकित्सकीय सलाह-संर्षा की जरूरत होती है। वैक्सीन के आने के साथ यह सुनिश्चित करना भी जरूरी होगा कि लोग इसे डेंगू से बचाव की एक अतिरिक्त रणनीति के रूप में समझें, न कि अन्य सावधानियों के विकल्प के रूप में। डॉ. रेड्डीज और टेकेडा के बीच सहयोग का उद्देश्य केवल वैक्सीन का वितरण नहीं है। कंपनियों के अनुसार, इसके तहत डेंगू के बारे में जागरूकता बढ़ाने और स्वास्थ्य पेशेवरों के साथ जुड़ाव को भी महत्व

भारतीय न्यायिक प्रक्रिया पर बदनुमा दाग है निठारी कांड

इस पूरे दिसंबर 2006 में नोएडा के निठारी गांव में हुए इस वीभत्स हत्याकांड के बाद सुरेंद्र कोली को कई मामलों में निचली अदालतों द्वारा फांसी की सजा सुनाई गई थी। हालांकि, जांच में गंभीर खामियों और सबूतों की विश्वसनीयता पर सवाल उठने के बाद इलाहाबाद हाई कोर्ट और आखिरकार नवंबर 2025 में सुप्रीम कोर्ट ने अंतिम लंबित मामले में भी उसे बरी करने का आदेश दिया। आपको बता दें 2003 में नोएडा के निठारी गांव के लोगों ने इलाके से महिलाओं और बच्चों के अचानक लापता होने की शिकायतें करनी शुरू कीं। हालांकि, नोएडा पुलिस ने इनमें से कई मामलों में शिकायत तक दर्ज नहीं की। जिन मामलों में शिकायत दर्ज हुई, उनमें भी ज्यादा प्रगति नहीं हुई।मई 2006 में इस मामले में बड़ा मोड़ आया। एक पिता अपनी लापता बेटी की शिकायत लेकर पुलिस के पास पहुंचा। उसने बताया कि लापता होने वाले दिन उसकी बेटी नोएडा के सेक्टर-31 में निठारी के पास रहने वाले मोर्निंदर सिंह पेंडेर की कोठी गई थी। जून तक इस मामले में एफआईअर दर्ज नहीं हुई। इसके बाद पिता ने एक वरिष्ठ पुलिस अधिकारी के सरकारी आवास के बाहर हंगामा किया, तब जाकर मामला दर्ज हुआ।लापता युवती के फोन को ट्रैस करने पर पुलिस सुरेंद्र कोली तक पहुंची। उस समय कोली पेंडेर के घर पर नौकर के रूप में काम करता था। कोली को गिरफ्तार किया गया, लेकिन जल्द ही जमानत पर छोड़ दिया गया। दिसंबर 2006 में पेंडेर के घर के पीछे एक नाले में प्लास्टिक की थैलियों में मानव कंकालों के अवशेष और लापता लोगों का सामान मिला। इसके बाद पुलिस ने 29 दिसंबर को कई महिलाओं और बच्चों के अपहरण और हत्या के आरोप में कोली और पेंडेर को गिरफ्तार कर लिया। मामले ने अब राष्ट्रीय स्तर पर सुर्खियां बटोरनी शुरू कर दी थीं। साथ ही निठारी मामले में नोएडा पुलिस की पहले की लापरवाही और जांच में नाकामी पर भी सवाल उठ रहे थे। इसके बाद 10 जनवरी 2007 को10 जनवरी 2007 को जांच केकेंद्रीय जांच ब्यूरो को सौंप दी गई। सीबीआई की फॉरेंसिक टीम ने पेंडेर के घर की दोबारा तलाशी ली और मानव कंकालों के अवशेष तथा गंभीर अपराधों से जुड़े सबूत बरामद किए।सीबीआई ने 1 मार्च को मजिस्ट्रेट की मौजूदगी

में कोली का कबुलनामा दर्ज किया। कोली ने हत्या की घटनाओं के बारे में बहुत विस्तार से बताया। उसने कहा कि वह पीड़ितों को बहला-फुसलाकर कोठी के अंदर लाता था, उनका गला घोटता था और फिर उनके शरीर के टुकड़े कर उन्हें पकाकर खाता था। नोएडा पुलिस ने 19 अलग-अलग लड़कियों से जुड़े अपराधों के मामले में पेंडेर और कोली के खिलाफ 19 प्राथमिकियां दर्ज की थीं। इनमें से 16 मामलों में सीबीआई ने आरोपपत्र दाखिल किए। 2007 में इनमें से एक मामले में दाखिल आरोपपत्र में सीबीआई ने दावा किया था कि कोली में मृत शरीरों के प्रति यौन आकर्षण और इंसानी मांस खाने जैसी प्रवृत्तियां थीं।एक विशेष सीबीआई अदालत ने 13 फरवरी 2009 को एक 14 साल की लड़की से बलात्कार और हत्या के मामले में पहली बार कोली और पेंडेर दोनों को दोषी ठहराया और मौत की सजा सुनाई। अपील पर इलाहाबाद हाई कोर्ट ने पेंडेर को बरी कर दिया, लेकिन कोली की मौत की सजा को बरकरार रखा।इसके बाद कोली ने सुप्रीम कोर्ट का दरवाजा खटखटाया। सुप्रीम कोर्ट ने 2011 में उसकी अपील और 2014 में पुनर्विचार याचिका खारिज कर दी। लेकिन जनवरी 2015 में इलाहाबाद हाई कोर्ट ने दया याचिका पर फैसला लेने में हुई अत्यधिक देरी को आधार बनाते हुए कोली की मौत की सजा को उम्रकैद में बदल दिया।अक्टूबर 2023 में इलाहाबाद हाईकोर्ट ने सबूतों की कमी, प्रक्रियागत खामियों और प्रताड़ना के आरोपों को देखते हुए कोली को 12 मामलों में और पेंडेर को 2 मामलों में बरी कर दिया। पेंडेर अक्टूबर 2023 में जेल से बाहर आ गया, जबकि कोली की रिहाई नवंबर 2025 में हुई। इस स्थिति में एक कानूनी विरोधाभास पैदा हो गया था। कोली 12 मामलों में बरी हो चुका था, लेकिन लगभग उन्हीं सबूतों के आधार पर एक मामले में अब भी दोषी था। सुप्रीम कोर्ट ने इसे न्याय का बड़ा विरोधाभास माना और अपनी क्यूरेटिव शक्तियों का इस्तेमाल करते हुए कहा कि समान सबूतों पर दो परस्पर विरोधी फैसले एक साथ नहीं रह सकते हैं। शीर्ष अदालत ने माना कि यह प्रक्रियागत और संरचनात्मक खामियों का मामला था। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने अपने 2011 के फैसले को वापस लेते हुए कोली को अंतिम मामले में भी सभी आरोपों से बरी कर तुरंत रिहा करने का आदेश दिया था।

निठारी कांड के पीड़ित परिवारों ने जिस तरह सुरेंद्र कोली की मौत पर कहा है कि वह भारतीय न्यायालय से बरी हुआ पर भगवान के घर देर है अंधेर नहीं और भगवान से बड़ा कोई न्यायाधीश नहीं पीड़ित माता-पिता के ये शब्द केवल एक आरोपी की मौत पर संतोष व्यक्त करना भर नहीं हैं, बल्कि यह उस हाताशा और वेदना की भी अभिव्यक्ति है जो वे वरसों से सीने में दबाए बैठे थे। जरा विचार कीजिए उन उन्नीस बच्चों के माता पिता परिवारों की स्थिति पर जिनके बच्चों को टाफी चाकलेट रोजगार और टिप देने का लालच देकर कोठी के भीतर बुलाया गया और इसके बाद वह कभी जीवित बाहर नहीं आ सके। इस कोठी के पिछवाड़े के खुले नाले से दर्जनों बच्चों के कंकाल खोपड़ी बरामद किए गए। सवाल उठता है कि बारह मामलों में फांसी की सलीब तक पहुंचने के बावजूद आधी रात के 1:35पर सुप्रीम कोर्ट के आदेश पर फांसी पर रोक लगा दी गई थी और फिर हाइकोर्ट और सुप्रीम कोर्ट ने सुरेन्द्र कोली के इकबाली बयान और सबूतों को पर्याप्त नहीं मानते हुए दोनों आरोपियों को बरी कर दिया। इस तरह सबसे वीभत्स और दरिंदगी भरा सीरियल हत्याकांड भारतीय कानून और न्याय व्यवस्था पर एक बदनुमा दाग बन कर रह गया सवाल यह भी है कि सुप्रीम कोर्ट ने इतना वीभत्स कांड की दोबारा जांच करने की भी सिफारिश नहीं की। 19 साल तक अदालत की चौखट पर सैकड़ों बार गवाही और सुनवाई के लिए चक्कर काटने वाले मजलूम गरीब परिवार ठगे से रह गए और दोनों आरोपियों को जेल से रिहा कर दिया गया। यह मामला भारतीय कानून व्यवस्था की अदालत की जटिल प्रक्रिया का एक स्याह नजोर है जांच एजेंसियों की लापरवाही, साक्ष्यों के संकलन में हुई चूक और अभियोजन की कमियां इतने बड़े और जबरन अपराध के मामलों को भी कमजोर कर सकती हैं। निठारी जैसे बर्बर मामलों के आरोपी कानून के शिकंसे से बाहर आ जाते हैं, तो पीड़ित परिवारों का न्यायापालिका से विश्वास उठना स्वाभाविक है।अब सुरेंद्र कोली की कथित आत्महत्या बता रही है कि कुदरत का भी एक कानून है जिससे बचना असंभव है। (यह लेखक के व्यक्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है)

संक्षिप्त

समाचार

कांगो में एबोला का कहर : प्रकोप के केंद्र में स्वास्थ्यकर्मियों के लिए टीकाकरण अभियान शुरू

किंशासा, एजेंसी। कांगो ने इतिहास के सबसे तेजी से फैलते एबोला प्रकोप के केंद्र बूनिया में स्वास्थ्यकर्मियों को टीके लगाना शुरू कर दिया है। यह अभियान ‘इरवेबो’ वैक्सीन के माध्यम से चलाया जा रहा है, ताकि जोखिम में तैनात लगभग 20,000 फ्रंटलाइन वर्कर्स की सुरक्षा की जा सके। देश में अब तक 7,541 मामलों की पुष्टि हो चुकी है, जिनमें 3,639 लोगों की मौत हो चुकी है। वर्तमान प्रकोप ‘बुंडीबुग्यो’ वायरस के कारण फैल रहा है, जिसका कोई स्वीकृत इलाज नहीं है। इसलिए वैज्ञानिक अध्ययन और सुरक्षा के उद्देश्य से इरवेबो वैक्सीन का उपयोग अनुकंपा आधार पर किया जा रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार असुरक्षा, हड़ताल और विस्थापन के कारण यह प्रकोप बेहद गंभीर और अनियंत्रित बना हुआ है।

ईरान में दिखा महिलाओं का साहस: बिना हिजाब 10 किमी दौड़ें

तेहरान, एजेंसी। ईरान की राजधानी तेहरान में महिलाओं के एक समूह ने देश के अनिवार्य हिजाब कानून का खुलेआम उल्लंघन करते हुए बिना हिजाब पहने 10 किलोमीटर की दौड़ प्रतियोगिता में भाग लिया। यह साहसिक कदम ऐसे समय उठाया गया है जब ईरानी अधिकारी पहले भी इसी तरह बिना हिजाब के दौड़ के आयोजन पर सख्त कार्रवाई कर चुके थे। यह प्रतियोगिता वेलायात पार्क में आयोजित की गई थी, जिसमें पुरुषों और महिलाओं के लिए अलग-अलग दौड़ की व्यवस्था थी। सोशल मीडिया पर बिना हिजाब के दौड़ती महिलाओं के वीडियो वायरल हो रहे हैं। इस घटना ने ईरान के सख्त हिजाब कानून की ओर दुनिया का ध्यान खींचा है।

युद्ध के बीच ईरान का शक्ति प्रदर्शन 3,13,000 लोगों ने दिखाई ताकत

तेहरान। ईरान में शुक्रवार को सरकार के आह्वान पर बड़ी संख्या में लोग सड़कों पर उतरे। सरकारी मीडिया के अनुसार, तेहरान में 3.13 लाख लोगों ने मार्च में हिस्सा लिया, जबकि रिवोल्यूशनरी गार्ड्स के कमांडर जनरल हसन हसांजादेह ने दावा किया कि छह लाख से अधिक लोग सीमित सैन्य प्रशिक्षण के लिए पंजीकरण करा चुके हैं और प्रशिक्षण में 10 लाख से अधिक लोगों के शामिल होने की उम्मीद है। तेहरान में प्रदर्शनकारियों ने ईरानी झंडे लेकर मार्च किया और देश की रक्षा के लिए हथियार होाने की तैयारी जताई। सरकार ने इस अभियान को ‘जाफदाये ईरान’ यानी ‘ईरान के लिए जाना खुबान करने वाले’ नाम दिया है। राज्य मीडिया कई दिनों से लोगों से इसमें शामिल होने की अपील कर रहा था।

अमेरिका में धार्मिक भेदभाव का मुकदमा, त्योहारों की अनदेखी पर मिशिगन का जवाब क्या?

मिशिगन , एजेंसी। अमेरिका के मिशिगन में धर्म आधारित मुकदमे का मामला सामने आया है। डियरबॉर्न शहर ने शनिवार को एक मुकदमे का जवाब दिया। मुकदमे में शहर पर मुस्लिम त्योहारों को मनाने और अन्य धर्मों के त्योहारों की अनदेखी का आरोप है। शहर ने अपने ऊपर हो रहे हमलों का कारण अपनी विविधता और ‘स्वागत योग्य स्वभाव’ को बताया। यह मुकदमा गुरुवार को दायर हुआ था, जिसमें शहर और मेयर पर ईसाई व यहूदी त्योहारों की अनदेखी करते हुए मुस्लिम त्योहारों पर हजारों अमेरिकी डॉलर खर्च करने का आरोप लगा। द फेडरलिस्ट की पत्रकार मार्गोट वलीवलैंड द्वारा दायर मुकदमे में कहा गया कि डियरबॉर्न ईसाइयों और यहूदियों के लिए शत्रुतापूर्ण जगह रहा है। मुकदमे के अनुसार, मेयर अब्दुल्ला हमुद ने पादरी टैड बारहम से कहा था कि उनका शहर में स्वागत नहीं है। शहर ने पिछले साल समजान बैनर्स पर 1,500 अमेरिकी डॉलर और पीस पार्क में चांद के प्रतीक पर 5,000 अमेरिकी डॉलर खर्च किए थे। लेकिन शहर ने ईसाई त्योहार ईस्टर और यहूदी त्योहार पासओवर को इसी तरह नहीं मनाया। शहर ने अपने बयान में कहा कि वह सभी निवासियों की निष्पक्ष और समान रूप से सेवा करने के लिए प्रतिबद्ध है। मेयर हमुद ने कहा कि डियरबॉर्न सभी का स्वागत करता है, चाहे उनका कोई भी धर्म हो।

अमेरिका ने मिडिल-ईस्ट में दूतावासों को अलर्ट भेजा:ट्रम्प छुट्टी खत्म होने से पहले व्हाइट हाउस लौटे

वॉशिंगटन डीसी/तेहरान, एजेंसी। मिडिल-ईस्ट में अमेरिका और ईरान के बीच एक बार फिर तनाव बढ़ता नजर आ रहा है। अमेरिका ने इलाके में मौजूद अपने दूतावासों और नागरिकों के लिए सुरक्षा अलर्ट जारी किया है। अमेरिकी विदेश विभाग ने लोगों से ज्यादा सतर्क रहने को कहा है। इसी बीच राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प अपना कैच डेविड दौरा एक दिन पहले खत्म कर शनिवार शाम व्हाइट हाउस लौट आए। ट्रम्प की जल्दी वापसी की वजह व्हाइट हाउस ने नहीं बताई है। वहीं, रशिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक, अमेरिकी बी-1बी लॉन्सर बॉम्बर ने ब्रिटेन के ब्रज फेंयरफोर्ड एयरबेस से फुल

आफ्टरबर्नर के साथ उड़ान भरते हुए मिडिल-ईस्ट की तरफ रवाना हुआ है। ईरान के प्रेस टीवी ने भी उल्लेख किया है। बाब-अल-मदेब जलडमरूमध्य के पास स्थित कहेबूब और ताइज के अल-कथा-अल-वाजियाह क्षेत्र इस समय सबसे बड़े युद्धक्षेत्र बने हुए हैं, जहां लगातार हमले और जवाबी कार्रवाई जारी है। ताइज और लहज में कई मोर्चों पर जारी है भीषण लड़ाई : सरकारी सेना के एक वरिष्ठ सैन्य सूत्र ने नाम न बताने की शर्त पर बताया कि दक्षिण-पश्चिमी यमन के ताइज और



गई है। अमरिकी नागरिकों से कहा गया है कि वे फ्लाइट और एयरपोर्ट से जुड़ी ताजा जानकारी देखते रहें। ईरान ने जंग खत्म करने के लिए 7 शर्तें रखीं : ईरान ने चल रही जंग खत्म करने के लिए अमेरिका के सामने 7 शर्तें रखी हैं। ईरान ने कहा है कि अगर अमेरिका ने उसकी मांगें नहीं मानीं तो वह जंग जारी रखने के लिए तैयार है। ईरान के सुरक्षा प्रमुख

मोहसिन रेजाई ने अल जजिरा से कहा कि कतर ने मध्यस्थ के तौर पर ईरान की शर्तें अमेरिका तक पहुंचा दी हैं। अब ईरान ट्रम्प के जवाब का इंतजार कर रहा है। रेजाई के मुताबिक, ईरान की मांगों में सभी मावों पर युद्ध रोकना, विदेशों में प्रोजेक्ट किए गए ईरानी फंड जारी करना और नौसैनिक नाकाबंदी खत्म करना शामिल है। सऊदी बोला- हूतियों ने रियाद पर मिसाइल हमले की कोशिश की : सऊदी अरब ने कहा कि हूतियों ने उसकी नागिंस मोहम्मदी ने कहा है कि देश में चल रही जंग, आर्थिक संकट और सरकारी दमन का सबसे ज्यादा असर आम लोगों पर पड़ रहा है। उन्होंने कसे बातचीत में

प्रवक्ता याह्या सरी ने कहा कि संगठन ने सऊदी अरब पर कई बैलिस्टिक और क्रूज मिसाइलों के साथ डोन भी भेजे। उनके मुताबिक, रियाद और सऊदी तेल कंपनी अरामको की यानबू स्थित सुविधाओं को निशाना बनाया गया। इस हमले के बाद सऊदी अरब और हूतियों के बीच तनाव और बढ़ गया है। ईरान की नोबेल विजेता बोलीं- जंग और दमन की कीमत लोग चुका रहे : ईरान की नोबेल शांति पुरस्कार विजेता नर्गिस मोहम्मदी ने कहा है कि देश में चल रही जंग, आर्थिक संकट और सरकारी दमन का सबसे ज्यादा असर आम लोगों पर पड़ रहा है। उन्होंने कसे बातचीत में

कहा कि हालात ऐसे हो गए हैं कि लोगों के लिए सांस लेना भी मुश्किल हो गया है। मोहम्मदी ने कहा कि पिछले डेढ़ साल में समाज में सरकारी दमन और बढ़ा है। आर्थिक दबब के साथ लोगों पर बढ़ती पाबंदियों ने उनकी मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। मोहम्मदी ने कहा कि इसके बावजूद कई ईरानी अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा रहे हैं। उन्होंने खास तौर पर युवा पीढ़ी का जिक्र किया, जो अपने अधिकारों को समझती हैं और विरोध करने से पीछे नहीं हट रही। नर्गिस मोहम्मदी कई सालों से मानवाधिकारों के लिए आवाज उठाती रही हैं और कई बार जेल का चुकी हैं।

कहा कि हालात ऐसे हो गए हैं कि लोगों के लिए सांस लेना भी मुश्किल हो गया है। मोहम्मदी ने कहा कि पिछले डेढ़ साल में समाज में सरकारी दमन और बढ़ा है। आर्थिक दबब के साथ लोगों पर बढ़ती पाबंदियों ने उनकी मुश्किलें और बढ़ा दी हैं। मोहम्मदी ने कहा कि इसके बावजूद कई ईरानी अपने अधिकारों के लिए आवाज उठा रहे हैं। उन्होंने खास तौर पर युवा पीढ़ी का जिक्र किया, जो अपने अधिकारों को समझती हैं और विरोध करने से पीछे नहीं हट रही। नर्गिस मोहम्मदी कई सालों से मानवाधिकारों के लिए आवाज उठाती रही हैं और कई बार जेल का चुकी हैं।

रूप से स्वीकार किया है कि उसके पास अंतरिक्ष की कक्षा में तैनात ऐसे हथियार हैं, जिनका इस्तेमाल शत्रु की कार्रवाई का मुकाबला करने के साथ-साथ आक्रामक और रक्षात्मक दोनों अभियानों में किया जा सकता है। यह खुलासा ऐसे समय हुआ है जब अमेरिका, चीन और रूस के बीच अंतरिक्ष में सैन्य वर्चस्व की होड़ तेज हो रही है। ट्रंप ने एआई को अगली औद्योगिक क्रांति या इंटरनेट जैसा बताया। उन्होंने कहा कि यह तकनीक अमेरिका के सकल घरेलू उत्पाद में 25 प्रतिशत तक योगदान दे सकती है। ट्रंप ने अपनी पोस्ट में एआई के ‘नफ्त होने’ को डेमोक्रेट्स की ओर से फैलाए जा रहे ‘कई झूठे दावों’ में से एक बताया। उन्होंने रूस-यूक्रेन युद्ध और वैश्विक तापमान बढ़ने के मुद्दे को भी ऐसे ही दावों की सूची में शामिल किया और कहा कि इनसे अमेरिका को ‘नुकसान’ पहुंच रहा है। हालांकि, ट्रंप ने प्रस्तावित ‘एआई फोर्स’ की संरचना या ‘एआई सीजर’ की जिम्मेदारियों के बारे में कोई जानकारी नहीं दी।

ईमानमज़ारी और हादी अली की फिर गिरफ्तारी, पीओजेके ह्यूमन राइट्स काउंसिल ने जताई गहरी चिंता, उठाए सवाल



किसी व्यक्ति के खिलाफ कानून के तहत जांच और मुकदमा चलाने का अधिकार राज्य के पास है, लेकिन न्यायिक आदेश के तुरंत बाद हुई कार्रवाई के कारण इसके कानूनी आधार को स्पष्ट करना जरूरी है। एंटी टेररिज्म कोर्ट में पेग्री, 30 दिन की रिमांड खारिज : पुनर्गिरफ्तारी के बाद इमान मजारी और हादी अली चट्टा को एंटी टेररिज्म कोर्ट यानी एंटीसी के सामने पेश किया गया। एचआरसी-पीओजेके ने दोनों की 30 दिनों की फिजिकल रिमांड की मांग की। हालांकि, गिरफ्तारी और की 30 दिन की रिमांड की मांग को स्वीकार नहीं किया। इसके बजाय दोनों को न्यायिक हिरासत में जेल

भेजने का आदेश दिया गया। इस घटनाक्रम के बाद एचआरसी-पीओजेके ने न्यायिक आदेशों के सम्मान और निष्पक्ष अदालती प्रक्रिया की जरूरत पर जोर दिया। परिषद ने कहा कि मामले में आगे की कानूनी कार्रवाई पारदर्शी तरीके से होनी चाहिए। संवैधानिक अधिकारों और निष्पक्ष सुनवाई पर जोर : मानवाधिकार परिषद ने कहा कि राज्य कानून के अनुसार किसी भी नागरिक के खिलाफ जांच और मुकदमा चला सकता है। हालांकि, गिरफ्तारी और न्यायिक प्रक्रिया के हर चरण में संबंधित कानूनी प्रावधानों का पालन जरूरी है। परिषद ने अधिकारियों से

नीदरलैंड में विरोध-प्रदर्शन के दौरान हिंसा

एम्स्टर्डम, एजेंसी। नीदरलैंड में प्रवासन और शरण नीतियों के खिलाफ प्रदर्शन कर रहे सैकड़ों दूर-दराज दक्षिणपंथी प्रदर्शनकारियों को दंगा पुलिस ने तितर-बितर किया। हिंसा के बाद स्थानीय अधिकारियों ने मार्च पर प्रतिबंध लगाया और पुलिस ने शनिवार को कई गिरफ्तारियां कीं। प्रदर्शनकारियों ने पुलिस पर पटाखे और अन्य वस्तुएं फेंकीं। न्याय मंत्री डेविड वैन वील ने एक्स पर इसे ‘घुणित दृश्य’ बताते हुए कड़ी प्रतिक्रिया मांगी। उन्होंने कहा कि प्रदर्शनकारियों ने नाजी सलाम किए, यहूदी विरोधी नारे लगाए और पुलिस पर हमला कर पटाखे फेंके। हेग नगर पालिका ने मैलीवेल्ड पार्क में हिंसा के बाद मार्च पर प्रतिबंध लगाया और भीड़ को तितर-बितर होने के आदेश दिया। यह अशांति पिछले साल हुई दक्षिणपंथी प्रदर्शन के दौरान हुए दंगों के एक साल बाद हुई। पिछले साल की झड़पों में एक पुलिस कार जलाई गई थी और केंद्रवादी डी66 पार्टी के

मुख्यालय पर हमला हुआ था। डी66 के नेता रॉब जेट्टन अब प्रधानमंत्री हैं। कैरेबियन सागर में अमेरिकी सेना का हमला, सद्विध ड्रग्स बोट पर स्ट्राइक में चार की मौत : वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी सेना ने कैरेबियन सागर में ड्रग्स तस्करी के संदेह में एक नाव पर हमला करके चार लोगों को मार गिराया है। यह कार्रवाई लैटिन अमेरिका में तस्करी के खिलाफ अमेरिकी अभियान का हिस्सा है। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के इस अभियान के तहत अब तक 69 हमलों में कम से कम 231 लोग मारे जा चुके हैं। अमेरिकी सेना ने दावा किया कि नाव तस्करी के रास्ते पर थी, हालांकि ड्रग्स होने का कोई पुख्ता सबूत पेश नहीं किया गया। अमेरिकी रक्षा मंत्री पीट हेगसेथ के अनुसार कोलंबिया, ग्वाटेमाला और होंडुरास जैसे देश भी साझा सैन्य अभियानों के लिए सहमत हुए हैं, हालांकि ग्वाटेमाला ने ऐसे किसी समझौते से इनकार किया है।

यमन में सरकारी सेना-हूती विद्रोहियों के बीच भीषण जंग, 24 घंटे में 44 की मौत



लहज प्रांतों में कई मोर्चों पर लगातार लड़ाई जारी है। दोनों पक्ष रणनीतिक इलाकों में अपनी स्थिति मजबूत करने के लिए अतिरिक्त सैनिक और हथियार भेज रहे हैं। सूत्र के मुताबिक, ताइज प्रांत के अल-कथा और अल-वाजियाह क्षेत्रों में पिछले 24 घंटों के दौरान हूती विद्रोहियों ने कई बार सरकारी ठिकानों पर हमला किया, लेकिन सेना ने सभी हमलों को विफल कर दिया। इन झड़पों में सरकारी सेना के छह जवान और

हूती समूह के 11 लड़ाके मारे गए। हूती के कई हमले विफल करने का दावा किया सरकारी सूत्र ने दावा किया कि हूती विद्रोहियों ने बड़ी संख्या में अतिरिक्त लड़ाके भेजकर कई जगहों पर रक्षा पंक्ति तोड़ने की कोशिश की, लेकिन उन्हें पीछे हटाने पर मजबूर होना पड़ा। वहीं लहज प्रांत के कहेबूब पर्वतीय क्षेत्र में भी दोनों पक्षों के बीच भीषण लड़ाई जारी है। यह इलाका बाब-अल-मदेब जलडमरूमध्य की

ओर जाने वाले मार्ग पर स्थित रणनीतिक ऊंचाई वाला क्षेत्र माना जाता है। एक अन्य सरकारी सैन्य अधिकारी ने बताया कि कहेबूब मोर्चे पर पिछले 24 घंटों में सरकारी सेना के 12 जवान मारे गए। दूसरी ओर, हूती समूह के एक सैन्य सूत्र ने दावा किया कि इसी अवधि में कहेबूब क्षेत्र में हुई लड़ाई में 15 हूती लड़ाके, जिनमें एक कमांडर भी शामिल है, मारे गए। हालांकि संघर्ष ऐसे समय में तेज हुआ है, जब इस महीने की शुरुआत में हूती विद्रोहियों ने यमन के दक्षिण-पश्चिमी लाल सागर तट पर महत्वपूर्ण बढ़त हासिल की थी। हूती समूह ने 10 सितंबर को रणनीतिक बंदरगाह शहर मोखा पर कब्जा किया और इसके अगले दिन 11 सितंबर को बाब-अल-मदेब जलडमरूमध्य के बीच स्थित मयून् (पेरिम) द्वीप पर भी नियंत्रण कर लिया।

स्पेस फोर्स के बाद अब एआई फोर्स की तैयारी, ट्रंप का बड़ा एलान, बोले- यह अगली औद्योगिक क्रांति



वॉशिंगटन , एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कहा है कि वह ‘एआई फोर्स’ बनाने की तैयारी कर रहे हैं और जल्द ही एक ‘एआई सीजर’ की नियुक्ति की घोषणा करेंगे। ट्रंप ने कहा कि वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता के क्षेत्र को ‘खत्म या नफ्त’ होने देने के लिए चुपचाप नहीं बैठेंगे। ट्रंप ने अपने दृष्ट सोशल अकाउंट पर एक पोस्ट में कहा कि अमेरिका इस महत्वपूर्ण उद्योग के विकास को किसी भी तरह बाधित या रोकने का काम नहीं करेगा। उन्होंने कहा, ‘हम किसी भी तरह इस अविश्वसनीय उद्योग के विकास में बाधा नहीं डालेंगे या उसे दबाएंगे नहीं। इसके बजाय, हम इसे महत्व देंगे, इसकी मदद करेंगे और इसके बढ़ने के साथ इस पर नजर रखेंगे। हालांकि, हम बुरे कामों पर भी नजर रखेंगे और मौजूदा आपराधिक और दीवानी न्याय व्यवस्था के जरिये ऐसा आसानी से कर सकते हैं।’ डोनाल्ड ट्रंप ने 2019 में अमेरिकी दबदबे को अंतरिक्ष में बढ़ाने के लिए स्पेस फोर्स का गठन किया था। वहीं, हाल ही में अमेरिका ने पहली बार स्पष्ट

समर्थन वाले समूह दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में अमेरिका के हितों या अमेरिकी लोगों और संस्थानों से जुड़े स्थानों को निशाना बना सकते हैं। इनमें अमेरिकी सुरक्षा व्यवस्था बढ़ा दी गई। अमेरिका ने इराक, बहरीन, ओमान, सऊदी अरब, ईरान, कतर, लेबनान, कुवैत और जॉर्डन में मौजूद अपने नागरिकों से सतर्क रहने को कहा है। अमेरिका की ओर से जारी चेतावनी में कहा गया कि ईरान समर्थित हूती विद्रोही सऊदी अरब के खिलाफ सैन्य गतिविधियों में शामिल रहे हैं। इस सैन्य संघर्ष के तेजी से बढ़ने की आशंका है। क्षेत्र से आने-जाने वाले अमेरिकी नागरिकों को हवाई अड्डों और विमान सेवाओं से जुड़ी सूचनाओं पर नजर रखने की सलाह दी गई है। चेतावनी में कहा गया कि मध्य पूर्व के बाहर भी अमेरिकी राजनयिक ठिकानों को निशाना बनाया गया है। ईरान और उसके



नागोया, एजेंसी। केंद्रीय युवा मामले और खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने जापान के नागोया में ‘संडे ऑन साइकिल’ अभियान में नेतृत्व किया। इस अभियान का मकसद सार्वजनिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना और टिकाऊ व सक्रिय जीवनशैली के लिए लोगों को प्रोत्साहित करना है। उन्होंने एशियाई खेलों के लिए भारतीय खिलाड़ियों को शुभकामनाएं भी दीं। इस कार्यक्रम में भारतीय राजदूत नगमा मोहम्मद मलिक भी शामिल हुईं। एशियन गेम्स 2026 के बारे में केंद्रीय मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि आज जापान के नागोया में एशियन गेम्स शुरू हो गए हैं। भारत से 503 युवा खिलाड़ियों का दल एशियन गेम्स में हिस्सा लेने पहुंचा है। उनका हौसला बढ़ाने और समर्थन दिखाने के लिए, नागोया में भारतीय समुदाय ने आज एक ‘संडे ऑन साइकिल’ कार्यक्रम आयोजित किया। मुझे खुशी है कि हमारा दल अच्छे प्रदर्शन कर रहा है और हमारा भारतीय समुदाय भी उनका हौसला बढ़ा रहा है। उन्होंने कहा, ‘यह स्वाभाविक है कि

विदेशों में रहने वाले हमारे भारतीय नागरिक हमारी ताकत हैं। भारतीय लोगों को जहां भी और जिस भी तरह की मदद की जरूरत होती है, हमारे प्रवासी हमेशा उनके साथ खड़े रहते हैं। नागोया में, हमारे भारतीय खिलाड़ियों का हौसला बढ़ाने और उनकी सुविधा के लिए, वहां रहने वाले भारतीयों ने सभी जरूरी इंतजाम किए हैं और कई युवा वॉलंटियर के तौर पर सेवा भी दे रहे हैं।

यही भारत की असली पहचान है। साइक्लिंग इवेंट में हिस्सा लेने पर जापान में भारत की राजदूत नगमा मोहम्मद मलिक ने कहा, ‘यह बहुत अच्छा अनुभव था। मुझे बहुत खुशी है कि मंत्री मांडविया ने यह शानदार पहल की है। वे जहां भी होते हैं, इसे (संडे ऑन साइकिल) करते हैं और यहां नागोया में भी उन्होंने ऐसा किया। सभी का एक साथ होना अच्छा लगा। मुझे खुशी है कि प्रवासी भारतीय इसमें शामिल हुए।’ भारतीय राजदूत नगमा मोहम्मद मलिक ने जापानी एथलीटों से मुलाकात के बाद कहा, ‘मैं कुछ एथलीटों से मिली थी।



क्यों होती है बेचैनी

आपाधापी व कोलाहल से परिपूर्ण इस युग में उत्तेजना या बेचैनी की शिकायत एक आम बात है। एक अध्ययन के अनुसार 20 से 34 फीसदी लोग इस शिकायत से ग्रस्त हैं।

लक्षण

उत्तेजना या बेचेनी जैसी शिकायत में व्यक्ति किसी भी काम को शुरू करने से पहले ही घबराते लगता है। उसका दिल तेजी से धड़कने लगता है, हाथ-पैरों में थरथराहट होती है और पेट में हलचल महसूस होती है। इस रोग का सीधा संबंध हमारे शरीर के तंत्रिका तंत्र से होता है। उत्तेजना से संबंधित दो तरह की बीमारियां प्रायः ज्यादातर लोगों में पाई जाती हैं।

कुछ अनजाने डर

इसे चिकित्सकीय भाषा में ‘ पैनिक डिसार्डर ’ भी कहते हैं। इस मर्ज में रोगी बिना किसी कारण के उलझन महसूस करने लगता है। मानो उसकी सांसें रुक जाएंगी और दिल जोर से धड़कने लगता है और उसे घुटन- सी महसूस होने लगती है। ऐसे रोगी भीड़भाड़ वाली जगह पर नहीं जाते, उन्हें लिफ्ट पर चढ़ने में डर लगता है कि कहीं लिफ्ट न गिर जाए। इसी प्रकार की एक दूसरी समस्या को चिकित्सकीय भाषा में सामान्य उत्तेजना गड़बड़ी (जनरल एंग्जाइटी डिसार्डर) कहते हैं। इस रोग में रोगी दिन- भर घबराता रहता है। वह मामूली आहट से भी सहम जाता है। इस वजह से उसे नींद नहीं आती है और उसका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है।

उपचार

इस तरह की मानसिक बीमारियों के उपचार के लिए अब यूएसएफडीए एपूव्ड जैसी कई प्रभावशाली दवाएं उपलब्ध हो चुकी हैं। इन दवाओं के सेवन से 12 से 15 सप्ताह के अन्दर रोगी पूर्णतः स्वस्थ हो जाता है, इसके साथ ही रोगी को मनोचिकित्सकीय परामर्श भी दिया जाता है।

जीभ का स्वाद बिगड़ जाए तो...



- राई - पानी में 10 ग्राम राई को डालकर उबाल लें। इस पानी से प्रतिदिन सुबह-शाम कुल्ला करने से जीभ का स्वाद ठीक हो जाता है।
- नौसादर - 5 ग्राम नौसादर और 5 ग्राम कालीमिर्च को पीसकर इसमें शहद मिलाकर जीभ पर रगड़ें तथा लार को बाहर गिरने दें। इससे जीभ की कड़वाहट दूर हो जाती है।
- दालचीनी - जीभ पर कड़वाहट महसूस होने पर दालचीनी या बच को पीसकर और छानकर इस चूर्ण में शहद मिलाकर सेवन करने से जीभ की कड़वाहट दूर हो जाती है।
- अमलतास - 20 ग्राम अमलतास के गूदे को 250 ग्राम गर्म दूध में मिलाकर कुल्ला करें। इससे अफीम तथा कोकीन के सेवन करने के कारण खराब हुआ जीभ का स्वाद फिर से ठीक हो जाता है।



पोस्टपार्टम अवसाद और ‘बेबी ब्लू’, दोनों ही स्थितियां एक दूसरे से अलग हैं, इन दोनों प्रकार के अवसाद के लक्षण भिन्न है। ‘बेबी ब्लू’ प्रसव पूर्व होने वाली ऐसी अवस्था है, जो सबसे सामान्य है और हर तीन में से एक महिला में यह स्थिति पाई जाती है। प्रसव के बाद कुछ हफ्तों में शरीर में हुए हार्मोनल परिवर्तन की वजह से ये विकार होता है। प्रसव के बाद नई मां अवसर भावनात्मक रूप से संवेदनशील हो जाती है, कुछ ही क्षण में वह खुश हो जाती है और अगले कुछ क्षणों में दुखी। ‘बेबी ब्लू’ विकार से और भी समस्याएं आ सकती हैं, लेकिन इससे आमतौर पर एक मां की जिम्मेदारी और कार्य में हस्तक्षेप नहीं होता और कुछ सप्ताह बाद यह बीमारी खत्म हो जाती है।

पोस्टपार्टम अवसाद एक अलग स्थिति है। यह समस्या प्रसव के पहले, दूसरे या तीसरे महीनों में किसी भी समय शुरू हो सकती है। इसमें दुःख और निराशा महसूस होती है या व्यक्ति कभी-कभी खुद को बेकार और दोषी मानता है। नई मां किसी भी कार्य या बात में एकाग्रता या रुचि लेने में असमर्थ हो जाती है, यहां तक कि बच्चे की जरूरतों को भी पूरा नहीं कर पाती। कुछ मामलों में बच्चों की जरूरतों को लेकर वो अति व्याकुल भी हो सकती है। वह बहुत चिंतायुक्त, संवेदनशील बन जाती है और उसके मन में इस तरह के परेशान करने वाले विचार बार-बार आने से उसको बच्चे के स्वास्थ्य की भी चिंता होने लगती है। ऐसे में नई मां बार-बार एक ही कार्य करती है, जैसे बच्चे कि बार-बार जांच करती है या फिर लगातार बच्चों के चिकित्सक को फोन करके सवाल पूछती है।

पोस्टपार्टम डिप्रेशन से बचाव

यदि आप गर्भवती हैं, तो आपके जीवन शैली में मातृत्व के बाद होने वाले बदलावों की पहले ही तैयारी करके खुद को पोस्टपार्टम अवसाद के जोखिम से बचाने में सक्षम किया जा सकता है। आप दूसरी माताओं या डॉक्टरों से बात करके नवजात शिशु की देखभाल के बारे में पूछ सकती हैं और इसमें कोई संकोच की बात नहीं। अगर आपको नवजात शिशु और आप में योग्य तालमेल निर्माण होने में समय लगता है तो आपको अपने साथी या डॉक्टर, जिनको आपकी परवाह है, उनसे मदद लेने में संकोच नहीं करना चाहिए। अवसर, जिनमें पोस्टपार्टम अवसाद का एक इतिहास है उनके लिए अवसाद के एण्टीडिप्रेसेंट उपचार के बिना मुकाबला करना मुश्किल होता है। इसलिए प्रसूति के तुरंत बाद डॉक्टर एण्टीडिप्रेसेंट दवा देना शुरू कर सकते हैं। इसके बारे में आपको पहले ही डॉक्टर से बात करना चाहिए। एक सामान्य नियम के रूप में डॉक्टरों को दवा की राशि गर्भावस्था के दौरान कम से कम निर्धारित करने की कोशिश करते हैं, लेकिन कभी-कभी अवसाद का जोखिम भ्रूण के जोखिम से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है। इसलिए यह बहुत ही जरूरी है कि आप अपने डॉक्टर के साथ इन बातों पर चर्चा करें।



चिकित्सा के नए आयाम



चमत्कारिक पुष्प औषधि रेस्वयू रेमेडी

कैसे हुई खोज

रेस्वयू रेमेडी चिकित्सा पद्धति के आविष्कारक रहे हैं डॉ. एडवर्ड बेच जो लन्दन में प्रमुख एलोपैथिक डॉक्टर थे। इस चिकित्सा पद्धति से असन्तुष्ट होने से उन्होंने होम्योपैथिक डिग्री प्राप्त की और होम्योपैथिक पद्धति से चिकित्सा कार्य करना शुरू किया, लेकिन शीघ्र ही वे होम्योपैथिक पद्धति से भी असन्तोष का अनुभव करने लगे और किसी और भी सरल लेकिन सफल चिकित्सा पद्धति की खोज में लग गये। प्रकृति का अध्ययन करते हुए उनका ध्यान फूलों की तरफ गया। उन्होंने विचार किया कि स्वभावतः मनुष्य का मन फूलों की तरह कोमल होता है और मूलतः मनुष्य का अन्तर्मन सौम्य, सरल और भावुक होता है। इसका यह प्राकृतिक रूप मन के जिन छह शत्रुओं से बनता या बिगड़ता है, उनके नाम हैं काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह और मत्सर। इन्हीं विकारों के प्रभाव से मनुष्य अपना प्राकृतिक स्वरूप याने स्वाभाविक अवस्था खो देता है। स्वाभाविक अवस्था का होना स्वास्थ्य है और इसे खो देना अस्वास्थ्य है, रोग है। मनुष्य की स्वाभाविक अवस्था फूलों के समान है और यदि यह अवस्था बिगड़ जावे तो

चिकित्सा के क्षेत्र में जो विभिन्न पद्धतियां प्रचलित हैं, उनमें एक नाम बेच प्लावर रेमेडीज का भी मौजूद है। इसे रेस्वयू रेमेडी भी कहते हैं। इस पद्धति की दवाएं चोट लगने की स्थिति में कारगर होती हैं। इनका साक्षिप्त परिचय आइए, जानते हैं।



इसे सुधारने के लिये फूलों का प्रयोग किया जा सकता है।

एलोपैथी आज दुनिया-भर में सर्वाधिक प्रचलित चिकित्सा प्रणाली है। नित नई औषधि-तत्वों की खोज हो रही है। ज्यादातर दवाओं के गंभीर दुष्परिणाम सामने आ रहे हैं। ऐसे में लोगों का रुझान सैकड़ों वर्षों से व्यवहृत और निरपद चिकित्सा पद्धतियों की तरफ देखा जा रहा है।

सन 1930 से 1936 तक के 6 वर्ष डॉ. एडवर्ड बेच ने इसी खोज में गुजार दिये और हजारों फूलों पर रिसर्च करने के बाद 38 प्रकार के फूलों को मनुष्य के विकारों को दूर करने में सक्षम पाया और इन 38 प्रकार के फूलों से उन्होंने 38 दवाइयां बनाईं, जो इन्हीं डॉ. के नाम से बेच प्लावर रेमेडीज के नाम से जानी जाने लगीं। इन 38 दवाओं में से 5 दवाइयां मिलाकर जो 39वीं दवा बनाई गई, उसका नाम रेस्वयू रेमेडी रखा गया, क्योंकि यह दवा किसी भी खतरनाक और गम्भीर स्थिति से छुटकारा (रेस्वयू) दिलाने वाली है। इन पांचों दवाइयों की साक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है-

राकरोज

यह दवा किसी भी दुर्घटना के कारण मन में जो डर या दहशत बैठ जाती है, उसके असर को दूर करती है। जब किसी भी दुर्घटना के कारण मन में इतना डर बैठ जाए कि हर समय वही घटना आंखों के सामने घूमती रहे तो यह दवा बहुत अच्छा काम करती है और मनुष्य शीघ्र ही सामान्य मानसिक अवस्था में आ जाता है।

स्टार ऑफ बेथलहम

यह दवा मानसिक आघात के असर को दूर करती है। कभी-कभी किसी दुर्घटना में शरीर के भीतर अन्दरूनी चोट लगती है, जिसका तत्काल पता नहीं चलता, पर बाद में शरीर में कष्ट पैदा हो जाता है। कई बार ऐसी किसी घटना का मन पर ऐसा गहरा असर होता है कि कई वर्ष गुजर जाने पर भी उसका असर नहीं जा पाता। उस स्थिति में यह दवा पूर्ण सकारात्मक प्रभाव मनुष्य के मन-मस्तिष्क पर करती है।

वलेमेटिस

जब किसी दुर्घटना के कारण कोई बेहोश हो जाए या अस्वाभाविक रूप से सो जाए, बेसुध हो जाए या कोई ख्याली पुलाव पकाता रहता हो तो यह दवा उसे सामान्य मानसिक अवस्था में ले आती है।

इम्पेशेंस

किसी दुर्घटना के बाद की उत्तेजित अवस्था और चिड़चिड़पन की स्थिति इस दवा के सेवन से दूर हो जाती है।

सहायक सदस्यों की कमी।

- अपने नए शिशु की देखभाल के लिए कठिनाई, खासकर अगर बच्चे को गंभीर चिकित्सा समस्याएं हैं।
- किशोर माताओं, खासकर यदि वे गरीब आर्थिक संसाधनों वाले परिवारों से हैं।
- इस तरह के लक्षणों वाली महिलाओं में पोस्टपार्टम अवसाद कि विशेष रूप से उच्च जोखिम होती है। आधे से भी कम महिलाएं जिनको पोस्टपार्टम अवसाद होता है, वो उनकी समस्याओं के लिये चिकित्सा कराती है। कुछ महिलाएं इस बात से अनजान होती की उनको पोस्टपार्टम अवसाद है और वह इलाज से ठीक हो सकता है। कुछ महिलाएं ऐसा सोचती है की उनको तो एक बच्चा होने के बाद खुश होना चाहिए फिर उनको उदासी क्यों हो रही है, इस तरह के अजीब लक्षणों से उनको शर्मिंदगी होती है और वो किसी से मदद भी नहीं ले पाती।

पोस्टपार्टम डिप्रेशन

पोस्टपार्टम डिप्रेशन के लक्षण

एक महिला जिसको पोस्टपार्टम अवसाद है, उसमें निम्नलिखित लक्षणों में से कोई भी लक्षण हो सकते हैं-

- टीयर फुलनेस निराश लगना और रोना आना।
- कभी-कभी बच्चे के सुरक्षा को ले के ससकी, मजबूर या बेचैन होना।
- कभी बच्चे को संभालने की जिम्मेदारी को ले के खुद को सक्षम ना समझना।
- खुद को निकम्मा, बेकार या दोषी समझना।
- अतिसंवेदनशील होना या दबाव महसूस होना।
- सभी गतिविधियों में से रुचि चली जाना या किसी बात पर आनंद होना एक मां होने पर भी आनंद ना होना।
- भूख में परिवर्तन (या तो ज्यादा खाना या आहार में कमी होना)।
- नींद में समस्या (नींद ना लगना, या जल्दी जाग जाना)।
- उत्तेजित दिखना या अत्यंत धीमा होना।
- सामान्य से बहुत थकान होना, जो एक बच्चे में सामान्य है।



धब्बेदार अधःपतन

धब्बेदार अधःपतन एक कठिन रोग है और वह एक नंबर के हैं। एफडीए इलाज को मंजूरी दी गई है। कई तरीकों से काम धीमा करने के लिए, रोक या धब्बेदार अधःपतन के प्रभाव को रिवर्स, कोई भी एक निर्णायक इलाज का परिणाम विश्वसनीय होता है। अधःपतन की जगह लेने के लिए कई परीक्षण हो रहे हैं। इनका उपचार किसी भी हालत के लिए उपयुक्त हो सकता है, अपने नेत्र चिकित्सक के साथ चर्चा करके ठीक तरह से उपचार कर सकते हैं। इसकी स्थिति सक्रिय होती है। धब्बेदार अधःपतन का व्यवहार शुष्क रहता है। यह इंजेक्शन के माध्यम से प्राप्त होता है।

लाभ

अधःपतन प्रोस्टाग्लैंडीन है, इससे रक्त प्रवाह, रेटिना के बीच रक्त प्रवाह के लिए प्रयोग किया जाता है। इस प्रकार से कोशिकाओं की रक्षा में मदद करता है।

बाल सफेद हो रहे हों तो...

एक चम्मच भर आंवला चूर्ण दो घूंट पानी से सोते समय अंतिम वस्तु के रूप में लें। असमय बाल सफेद होने और चेहरे की कान्ति नष्ट होने पर जादू का सा असर करता है। (साथ ही स्वर को मधुर और शुद्ध बनाता है तथा गले की घर-घराहट भी इससे ठीक हो जाती है।

एक और उपाय है

आंवला चूर्ण का लेप - सूखे आंवलों के चूर्ण को पानी के साथ लेई बनाकर इसका खोपड़ी पर लेप करने तथा पांच दस मिनट बाद केशों को जल से धो लेने से बाल सफेद होने और गिरने बन्द हो जाते है।



आंवला जल से सिर धोएं

25 ग्राम सूखे आंवलों को मोटा कूटकर किए हुए टुकड़ों को 250 ग्राम पानी में रात को भिगो दें। प्रातः फूले हुए आंवलों को कड़े हाथ से मसलकर सारा जल पतले स्वच्छ कपड़े से छान लें। अब इस निथरे हुए जल को केशों की जड़ों में हल्के-हल्के अच्छी तरह मलिए और दस बीस मिनट बाद केशों को सादे पानी से धो डालिए। रूखे बालों को सप्ताह में एक बार और चिकने बालों को सप्ताह में दो बार धोना चाहिए।



पहली बार ऐतिहासिक और सांस्कृतिक श्रद्धासयत का किरदार निभाने जा रही हैं रश्मिका मंदाना

भारत की महान कर्नाटक शास्त्रीय गायिका एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की असाधारण जिंदगी और संगीत के सफर पर आधारित इस बहुप्रतीक्षित बायोपिक में उनकी संघर्षपूर्ण यात्रा, उपलब्धियों और संगीत की अमिट विरासत को पर्दे पर उतारा जाएगा। फिल्म में रश्मिका मंदाना एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी की भूमिका निभाएंगी, जबकि गौतम तिन्ननुरी निर्देशन और अनिरुद्ध रविचंद्र संगीत की जिम्मेदारी संभालेंगे। उनकी 110वीं जयंती पर चेन्नई में फिल्म का आधिकारिक लॉन्च किया गया। फिल्म में रश्मिका मंदाना एम. एस. सुब्बुलक्ष्मी का किरदार निभाएंगी, जबकि गौतम तिन्ननुरी इसका निर्देशन करेंगे। वहीं, फिल्म का संगीत अनिरुद्ध रविचंद्र तैयार करेंगे। फिल्म को गौतम तिन्ननुरी निर्देशित कर रहे हैं जो 'Jersey' और 'Kingdom' जैसी फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। कहानी में सुब्बुलक्ष्मी के जीवन के अलग-अलग दौर और उनके असाधारण संगीत करियर को दिखाने की बात सामने आई है। फिल्म की रिलीज डेट, पूरा टाइटल और स्टार कास्ट की

आधिकारिक जानकारी अभी सामने नहीं आई है। शुरुआती रिपोर्टों में पहले साई पल्लवी और दूसरी एक्टरस के नाम भी सामने आए थे, लेकिन अब रश्मिका मंदाना की कास्टिंग आधिकारिक रूप से घोषित हो चुकी है। लॉन्च से जुड़ी सबसे बड़ी खबरों में से ये कन्फर्म है कि अनिरुद्ध रविचंद्र एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी बायोपिक के लिए संगीत तैयार करेंगे। तमिल और तेलुगु सिनेमा में अपने काम के लिए मशहूर यह संगीतकार अब भारत की सबसे प्रतिष्ठित शास्त्रीय गायिकाओं में से एक की कहानी पर आधारित फिल्म के लिए संगीत बनाने की चुनौती लेंगे। अनिरुद्ध के जुड़ने से इस प्रोजेक्ट में एक और बड़ा नाम शामिल हो गया है, जो पहली बार रश्मिका मंदाना और गौतम तिन्ननुरी को एक साथ ला रहा है। कमल हासन मुख्य अतिथि के तौर पर लॉन्च इवेंट में शामिल हुए, जिससे इस मौके की अहमियत और बढ़ गई। रश्मिका मंदाना मशहूर गायिका एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी का किरदार निभाएंगी, जो भारत की शास्त्रीय संगीत

परंपरा की सबसे प्रतिष्ठित हस्तियों में से एक हैं। एक्टरस को चुनने को लेकर पहले ही काफी दिलचस्पी पैदा हो गई थी, क्योंकि प्रोजेक्ट की ऑफिशियल अनाउंसमेंट से पहले ही इस रोल के लिए अन्य एक्टरस के बारे में खबरें आ रही थीं। रश्मिका अब सुब्बुलक्ष्मी की पर्सनल और प्रोफेशनल जर्नी को पर्दे पर लाने की जिम्मेदारी संभालेंगी। इस फिल्म को पैन-इंडिया प्रोजेक्ट के तौर पर प्लान किया जा रहा है। जबकि सहायक कलाकारों, कहानी और टेक्निकल टीम के अन्य सदस्यों के बारे में और जानकारी बाद में सामने आने की उम्मीद है।

रश्मिका के लिए खास है यह रोल

रश्मिका पहली बार एक ऐसी ऐतिहासिक और सांस्कृतिक श्रद्धासयत का किरदार निभाने जा रही हैं, जिसकी पहचान मुख्य रूप से कर्नाटक शास्त्रीय संगीत से जुड़ी है। उन्होंने सोशल मीडिया पर इस भूमिका को अपने लिए सम्मान की बात बताया है। फिल्म का पहला लुक और आधिकारिक टाइटल भी लॉन्च के आसपास सामने आने की उम्मीद है।

अक्षय की फिल्म 'समुक' में हुई विनीत की एंट्री

अक्षय कुमार की आने वाली साइंस फिक्शन फिल्म 'समुक' इन दिनों चर्चा में है। इससे जुड़ी कई नई अपडेट के बीच अब खबर है कि एक्टर विनीत कुमार सिंह भी इस फिल्म का हिस्सा बन गए हैं। 'मुक्काबाज', 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' और 'छावा' जैसी फिल्मों में अपने दमदार अभिनय से पहचान बनाने वाले विनीत फिल्म में एक अहम भूमिका निभाते नजर आएंगे। सूत्रों का कहना है कि उनका किरदार अक्षय के किरदार के साथ एक बड़े मिशन का हिस्सा होगा। दोनों के किरदारों के बीच मजबूत रिश्ता भी देखने को मिल सकता है।



कहानी और क्रिएटिविटी में टीवी, फिल्मों और ओटीटी से काफी पीछे है

एक्टरस चाहत खन्ना ने टीवी इंडस्ट्री को लेकर चल रही बहस के बीच रोहित रॉय के हालिया विवादित बयान पर अपनी राय रखी है। रोहित ने अपने एक इंटरव्यू में टीवी को 'इस्टबिन मीडियम' तक कह दिया था और मौजूदा टीवी कंटेंट की क्वालिटी, कॉन्सेप्ट और क्रिएटिविटी पर सवाल उठाए थे। अब चाहत खन्ना ने भी माना है कि अगर बात कहानी और क्रिएटिविटी की हो तो टीवी इस समय फिल्मों और ओटीटी से काफी पीछे है। हालांकि, चाहत ने यह भी साफ किया कि उन्होंने रोहित का पूरा इंटरव्यू नहीं देखा है, इसलिए वह उनके पूरे बयान पर कमेंट नहीं करना चाहती। खास बातचीत में चाहत ने कहा, 'मैं खुद टीवी से आई हूँ और इस माध्यम की बहुत इज्जत करती हूँ। टीवी ने मुझे एक एक्टर के तौर पर मजबूत बनाया है। यहां एक्टर को तबे समय तक लगातार शूटिंग करनी पड़ती है। कई बार 12 से 15 घंटे तक शूट करना सामान्य बात लगती है। फिल्मों में काम करने का तरीका अलग है और वहां क्रिएटिविटी को अलग तरह से ट्रैक किया जाता है। वहीं ओटीटी में भी कहानी की डिटेल्स और क्रिएटिविटी का तरीका टीवी से काफी अलग है।' एक्टरस ने रोहित रॉय की बात के उस हिस्से से सहमत जताई, जिसमें उन्होंने टीवी के मौजूदा कॉन्सेप्ट और क्रिएटिविटी पर सवाल उठाए थे। चाहत ने कहा, 'अगर कहानी और क्रिएटिविटी की बात की जाए तो टीवी को अभी काफी आगे जाने की जरूरत है। टीवी का कंटेंट मास ऑडियंस को ध्यान में रखकर तैयार किया जाता है। दर्शक जिस तरह की कहानियाँ और शोज देखना चाहते हैं, मेकर्स भी उसी डिमांड के हिसाब से कंटेंट बनाते हैं। यह पूरी तरह बिजनेस का हिस्सा है। अगर किसी तरह का कंटेंट बड़ी संख्या में लोग देख रहे हैं, तो उसे बार-बार बनाए जाने के पीछे एक मार्केट डिमांड भी होती है।' चाहत ने अपने करियर का उदाहरण देते हुए बताया, 'मुझे कई ऐसे टीवी शोज के ऑफर मिलते हैं, जिनसे मैं खुद कनेक्ट नहीं कर पाती। खासतौर पर 'नागिन' जैसे शोज, जिनसे मैं जुड़ नहीं पाती। अगर कोई एक्टर क्रिएटिव है तो उसके लिए टीवी के कुछ मौजूदा कॉन्सेप्ट से जुड़ना मुश्किल हो सकता है।' चाहत ने आगे कहा, 'अगर मैं ऐसे प्रोजेक्ट्स से जुड़ पाती तो शायद करियर के लिए चीजें और बेहतर होतीं। जो चीज मुझे पसंद आती है और जिससे मैं खुद जुड़ाव महसूस करती हूँ, वही काम करना मेरे लिए ज्यादा जरूरी है।'



विक्रांत मैसी ने बताई सक्सेस की नई परिभाषा

कहा-सफलता का मतलब पैसा नहीं, अच्छा स्वास्थ्य

अभिनेता विक्रांत मैसी इन दिनों अपनी हालिया रिलीज सीरीज 'मुसाफिर कैफे' को लेकर सुर्खियों में बने हुए हैं। अभिनेता का मानना है कि कुछ मामलों में सफलता की परिभाषा में काफी बदलाव देखने को मिले हैं। अभिनेता ने आईएनएस से बातचीत में कहा कि आज सफलता सिर्फ करियर या पैसे तक ही सीमित नहीं है बल्कि इसमें अच्छी सेहत, मन की शांति और खुशहाल जिंदगी जीना भी शामिल है। विक्रांत मैसी ने कहा, '20 साल पहले हम मानसिक स्वास्थ्य के बारे में बात नहीं करते थे। आज इन चीजों पर खुलकर चर्चा हो रही है क्योंकि कहीं न कहीं हम सब समझ गए हैं कि सेहत ही सबसे बड़ी दौलत है।' अभिनेता ने जोर देते हुए कहा कि अगर आप स्वस्थ हैं, तो सफल हैं। उन्होंने कहा, 'भले ही आपके पास बड़ा घर न हो लेकिन अगर आप रात

को चैन से सो पा रहे हैं, नींद को गोलियाँ नहीं लेनी पड़ रही हैं और आपके घर में बड़ों का सपोर्ट है, तो आप सफल हैं।' अभिनेता विक्रांत मैसी ने कहा कि दुनिया काफी तेजी से बदल रही है, जिसका असर लोगों की सोच और सपनों पर पड़ रहा है। उन्होंने कहा, 'आज सफलता का मतलब कुछ और ही है और टेक्नोलॉजी को तरह यह भी तेजी से बदलने वाला है। दुनिया इस स्पीड से चल रही है।' अभिनेता हाल ही में वेब सीरीज 'मुसाफिर कैफे' में वेदिका पिंटो और महिमा मकवाना के साथ नजर आए थे। यह सीरीज आधुनिक रिश्तों, भावनाओं और सपनों की खींचतान को बहुत ही सहजता से दिखाती है।



विजय स्टारर 'मटका किंग' के दूसरे सीजन की तैयारी शुरू

विजय वर्मा की वेब सीरीज 'मटका किंग' अब दूसरे सीजन के साथ वापसी करने जा रही है। विजय वर्मा ने खुद सोशल मीडिया पर इसकी जानकारी दी है। एक्टर ने दूसरे सीजन की पहली कड़ी की स्क्रिप्ट की तस्वीर साझा की है। इसका नाम 'एक और बाजी' रखा गया है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी संकेत दिया कि दूसरे सीजन का काम शुरू हो चुका है। 'मटका किंग' के दूसरे सीजन में विजय एक बार फिर बूज भट्टी के किरदार में नजर आएंगे। पहले सीजन की पूरी कहानी इसी किरदार के आसपास आगे बढ़ी थी। सीरीज में बूज भट्टी के सफर को दिखाया गया था।



फिल्म 'द वन' का अनोखा कॉन्सेप्ट सुनते ही तैयार हुई थीं एकता कपूर

सिद्धार्थ मल्होत्रा और तमन्ना भाटिया की अगली फिल्म 'द वन : फॉर्स ऑफ द फॉरैस्ट' है। इसकी कहानी बिहार की धरती से निकली है। टीवीएफ के फाउंडर अरुणाभ कुमार ने एक हालिया मीडिया इंटरव्यू में खुलासा किया है कि यह आइडिया उन्हें तब आया जब उन्होंने पटना के पास स्थित वन देवी मंदिर का दौरा किया था। स्थानीय पुजारियों और ग्रामीणों से बातचीत के दौरान उन्हें पता चला कि वन देवी मंदिर 16वीं शताब्दी में बनाया गया था। इस मंदिर के इर्द-गिर्द के जंगल को लेकर सदियों से एक अनकही मान्यता चली आ रही है कि सूर्यास्त के बाद वहां जाना वर्जित है।



अरुणाभ ने करीब दो साल पहले यह किस्सा 'पंचायत' फेम डायरेक्टर दीपक कुमार मिश्रा को सुनाया था। दीपक को यह अनोखा कॉन्सेप्ट इतना पसंद आया कि वे इसे लेकर सीधे एकता कपूर के पास पहुंचे और एकता ने भी इसे बड़े परदे पर उतारने का मन बना लिया। निर्देशक दीपक के मुताबिक, इस फिल्म को बनाते वक्त उनके सामने सबसे बड़ी चुनौती उस दुनिया को रचना था, जो आज के समय जैसी भी लगे और जंगल के रहस्यमय माहौल को भी सही तरीके से दिखा सके।

फिल्म में हैवी एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट्स भी दिखेंगे

कहानी को जीवंत बनाने के लिए हैवी एनिमेशन और विजुअल इफेक्ट्स का सहारा लिया गया है। फिल्म को शोभा कपूर, एकता आर कपूर, अरुणाभ कुमार और नीरज कोठारी ने मिलकर प्रोड्यूस किया है।